ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

सावन-भादों, संवत् नानकशाही 552
वर्ष 13 अंक 12 अगस्त 2020

मुख्य संपादक : सिमरजीत सिंघ
संपादक : सतविंदर सिंघ फूलपुर
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब- 143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादकीय विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 5
जीवन-उद्धार का प्रेरणा स्रोत : श्री गुरु ग्रंथ साहिब 8
-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ
सर्वसाझा व सर्वकालिन : श्री गुरु ग्रंथ साहिब 13
-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'
श्री गुरु ग्रंथ साहिब में वर्णित गृहस्थ-जीवन 16
-डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल
सिध गोसटि : विचार व्याख्या 19
-डॉ. मनजीत कौर
भाई गुरदास जी : जीवन-परिचय और गुरमति-सेवा 24
-डॉ. नवरत्न कपूर (दिवंगत)
धर्म की अवधारणा और गुरमत 29
-डॉ. तरसेम सिंघ लड्डा
... मोर्चा गुरुद्वारा गुरु का बाग़ 31
-स. हरशरन सिंघ
भारत की आज़ादी के लिए सिक्खों की कुर्बानियां 41
- स. गुरदीप सिंघ
सरदार करतार सिंघ सराभा 45
-डॉ. विभा खरे
खबरनामा 47

गुरबाणी विचार

भादुइ भरमि भुलाणीआ दूजै लगा हेतु ॥
लख सीगार बणाइआ कारजि नाही केतु ॥
जितु दिनि देह बिनससी तितु वेलै कहसनि प्रेतु ॥
पकड़ि चलाइनि दूत जम किसै न देनी भेतु ॥
छडि खड़ोते खिनै माहि जिन सिउ लगा हेतु ॥
हथ मरोड़ै तनु कपे सिआहहु होआ सेतु ॥
जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेतु ॥
नानक प्रभ सरणागती चरण बोहिथ प्रभ देतु ॥
से भादुइ नरकि न पाईअहि गुरु रखण वाला हेतु ॥७ ॥ *(पन्ना १३४)*

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में भादों महीने के प्राकृतिक अथवा भूमंडलीय वातावरण के प्रसंग में प्रभु-नाम से बिछड़े मनुष्य-मात्र की विवशता की स्थिति एवं अमूल्य मानवी जीवन को व्यर्थ गंवाने के रुझान को गलत बताते हुए इस जीवन रूपी अवसर में प्रभु-नाम का सहारा लेने के लिए मार्गदर्शन करते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि जैसे भादों के महीने में मनुष्य बहुत घबरा जाता है (क्योंकि गर्मी के मौसम में बरसात के कारण हवा में नमी ज्यादा हो जाने से हुंमस हो जाती है), वैसे ही प्रभु मालिक के अतिरिक्त अन्य सांसारिक मोह-लगाव होने से घबरा जाना स्वाभाविक है। भादों के महीने में जैसे कोई स्त्री लाख शृंगार करे तो भी वह व्यर्थ ही जाता है, इसी तरह मनुष्य-मात्र द्वारा धारण की जाने वाली बाहरी सजावट किसी काम नहीं आती अर्थात् जीवन की सफलता अर्थपूर्ण कार्य करने में है।

मृत्यु का दृष्टांत देते हुए सतिगुरु जी कथन करते हैं कि जिस दिन यह शरीर खत्म हो गया तो तुझे प्रेत कहा या समझा जाएगा। यम के दूत तुझे लेकर चल पड़ेंगे और अन्य किसी को इसका पता नहीं चलने देंगे। जब शरीर में से भंवरा निकल गया तो क्षण भर में तेरे परिवार वाले तुझे छोड़ देंगे, जिनसे तूने अत्यंत लगाव बना रखा है। तब तू हाथ मलेगा। तेरा शरीर कठिन स्थिति में होगा। घबराहट से तेरा रंग काले से सफेद हो जाएगा। जैसा कोई बोता है वैसा ही काटता है। यह मातलोक, यह धरती कर्म किये जाने योग्य खेत ही तो है।

गुरु जी अंत में मार्ग बख्शिश करते हुए फरमान करते हैं कि जो मनुष्य प्रभु की शरण में आ जाते हैं गुरु उनको प्रभु-नाम रूपी जहाज में बिठा लेते हैं। वे भादों महीने की नरक तुल्य स्थिति से गुरु से संबंध बनने के कारण बच जाते हैं।

संपादकीय

आज़ादी के असली नायक

कोई देश हज़ारों वर्ष से ग़ुलामी की जंजीरों में जकड़ा रहा हो, उसी देश में लगभग दो सौ चालीस वर्ष की आयु वाली कौम इन जंजीरों को तोड़ कर स्वतंत्र राज्य स्थापित कर ले, ऐसा महाइंकलाब सिक्ख कौम के बिना दुनिया के इतिहास में और कहीं नहीं मिलता। सदियों की ग़ुलामी भोग कर स्वाभिमान खो चुकी भारतीय जनता के मन-मस्तिष्क में आत्मविश्वास जगाने के लिए सिक्ख धर्म के बानी श्री गुरु नानक देव जी ने 'निर्मल पंथ' की स्थापना की। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खंडे-बाटे की पाहुल छका कर जीवन में हर पक्ष से स्वतंत्र 'खालसा पंथ' सजाया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से अमृत की दात प्राप्त कर बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने १७१० ई. में स्वतंत्र खालसयी राज्य स्थापित कर भारतवासियों को सदियों पश्चात पहली बार आज़ादी का एहसास करवाया।

इसके बाद भारत की आज़ादी की बात करें तो इसमें भी सिक्खों ने अपनी दो प्रतिशत आबादी के बावजूद ८० प्रतिशत कुर्बानियां देकर आज़ादी का तोहफ़ा भारतवासियों की झोली में डाला। आज़ादी की लहर में सिक्खों के लासानी योगदान को पढ़-सुन कर हर कोई दंग रह जाता है और चिंतकों के मन में ऐसी बहादुर कौम के धर्म-विश्वासों, इसके लासानी इतिहास के बारे में जानने की इच्छा पैदा होती है। सिक्ख कौम के इतिहास के बारे में अध्ययन कर बुद्धिमान चिंतक यह स्वीकार करते हैं कि सिक्ख इतिहास का आधार गुरबाणी है, गुरमति सिद्धांत हैं इसलिए सिक्ख धर्म के शौर्य के बारे में जानने के लिए गुरबाणी, गुरमति सिद्धांतों आदि के बारे में जानना ज़रूरी है।

गुरु साहिबान ने गुरबाणी के माध्यम से जो स्वस्थ जीवन-जाच सिक्खों को प्रदान की वह *''खंनिअहु तिखी वालहु निकी''* वाला मार्ग था। सिक्ख पंथ में शामिल होना *''सिरु धरि तली गली मेरी आउ''* वाले पूर्ण आत्मसमर्पण की वचनबद्धता है। यदि कहीं देश-कौम पर कोई संकट आ बने तो इसी वचनबद्धता को निभाते हुए सिक्खों ने दीन के हेत पुरज़ा-पुरज़ा कटवा कर देश-धर्म की लाज रखनी है। इतिहास गवाह है कि सिक्खों ने यह लाज रखी भी है। ऐसी प्रणधारी शूरवीर कौम ही ग़ुलामी की हर ज़ंजीर को तोड़ने के योग्य है। इसके विपरीत ''अंतरि पूजा पड़हि कतेबा'' वाली दीनी समझौतावादी कौम से और भी हज़ारों वर्ष आज़ादी की कल्पना नहीं की जा सकती है।

बे-ग़ैरत जीवन मानसिक ग़ुलामी स्वीकार कर अपनी भाषा, अपने पहनावे, अपने सभ्याचार, अपने सिद्धांतों को तिलांजलि देकर ज़लालत से भरपूर ज़िंदगी जीने के लिए रज़ामंद हो जाता है, जबकि

गुरमति विचारधारा *''जे जीवै पति लथी पैदा जाइ ॥ सभु हरामु जेता किछु खाइ ॥''* के कथनानुसार स्वाभिमान से भरपूर जीवन जीने का उपदेश देती है। इतिहास इस बात का गवाह रहा है कि केवल अपनी इज़्ज़त ही नहीं बल्कि दूसरों की इज़्ज़त बचाने की ख़ातिर भी सिक्खों ने अपनी जान कुर्बान की।

श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब जी का उपदेश *''भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन''* सिक्ख कौम के आज़ाद व्यक्तित्व को पेश करता है। भक्त शेख फ़रीद जी के वचन *''फरीदा बारि पराइऐ बैसणा सांई मुझै न देहि''* वाली जीवन-युक्ति लाचारी एवं दूसरों पर निर्भर रहने वाले जीवन को स्वीकार नहीं करती।

भारत की सदियों की दुर्दशा और सिक्ख इंकलाब को धर्म के भक्ति-स्वरूप के पक्ष से भी विचारा जा सकता है। धर्म-शास्त्री यह बात स्वीकार करते हैं कि आध्यात्मिक जीवन के विकास के लिए निर्गुण भक्ति का मार्ग ज़्यादा सफल साधन है। इसके विपरीत सगुण भक्ति आत्मिक विकास के मार्ग में रुकावट का कारण बनती है। निर्गुण भक्ति में चेतना शबद में अभेद होकर *''तिथै जोध महाबल सूर''* वाली पदवी हासिल कर लेती है। चेतना बलवान हो तो शरीर भी बलशाली हो जाता है। *''बलु होआ बंधन छुटे''* के पवित्र वाक्यानुसार बल हो तो बंधन (ग़ुलामी) भी छूट (टूट) जाते हैं।

भाई गुरदास जी के कथन ''वरनावरन न भावनी खहि खहि जलन बांस अंगिआरा'' वाले हालात देश की ग़ुलामी और दुर्दशा का कारण बने रहे। गुरु साहिबान द्वारा दृढ़ करवाए संगत-पंगत के सिद्धांत ने भारत में मज़बूत सामाजिक आधार प्रदान किया, जो ग़ुलामी की जंजीरों को तोड़ने में सहायक हुआ।

सिक्ख कौम जिस क्षेत्र में पैदा हुई उसे भारत की खड्ग-भुजा कहते हैं। विदेशी हमलावरों का मुकाबला कर मंझी हुई सिक्ख कौम की रग-रग में आत्मसम्मान, बहादुरी के गुण समाए हुए हैं, इसलिए यह कौम देश को ग़ुलामी से आज़ाद कराने के योग्य है।

दुनिया के इतिहास में सिक्ख कौम एकमात्र ऐसी कौम है जिसकी आज़ाद रहने वाली प्रकृति के कारण इसे कदम-कदम पर संघर्ष करना पड़ा और अमन-विरोधी शक्तियों के समक्ष न झुकते हुए जान भी कुर्बान करनी पड़ी। अफ़सोस कि आज़ादी के बाद शासन का आनंद लेने वाली सरकारों ने सिक्खों की कुर्बानियों की कभी कद्र नहीं की।

आज भी देश की सरहदों पर जब खतरे के बादल मंडराने लगते हैं तो सिक्ख रेजिमेंट को ही आगे किया जाता है। इस रेजिमेंट ने पिछले दिनों १५ जून, २०२० को शस्त्रधारी खालसा पंथ के न्यारेपन वाले इतिहास को एक बार फिर दुहराया है, जिससे दुनिया भर में सिक्खी का मान और बढ़ा है। भारत-चीन सरहद पर लद्दाख़ की गलवान घाटी में जहां निहत्थे ग़ैर-सिक्ख भारतीय जवानों का चीनी फौजियों ने भारी नुकसान किया, वहीं सिक्ख रेजिमेंट (III rd Punjab) के जवान चीनी फौजियों पर

भारी रहे। कलगीधर पिता द्वारा प्रदत्त खंडे-बाटे की पाहुल छके शस्त्रधारी भारतीय फ़ौज के २३ वर्षीय सिक्ख जवान सिपाही स. गुरतेज सिंघ ने पहले अपने बाहुबल से और फिर गुरु द्वारा बख्शिश की गई अपनी सिरी साहिब से चीनी फ़ौज का मुकाबला करते हुए १२ चीनी फौजियों को मार कर शहादत प्राप्त की। स. गुरतेज सिंघ ने कलगीधर पिता का बख़्शा (प्रदान किया) खालसयी जैकारा 'बोले सो निहाल, सति श्री अकाल' गजा कर चीनी फौजियों की आधी साँस तो जैकारों से ही उखाड़ दी। चार चीनियों को पहाड़ी से नीचे फेंक कर मार दिया। फिर सिरी साहिब से एक चीनी फौजी का गला काट कर उसी के हथियार से सात और चीनी सिपाहियों को मार दिया। इसके साथी तीन अन्य फ़ौजी— नायब सूबेदार स. सतनाम सिंघ, स. मनदीप सिंघ और सिपाही स. गुरविंदर सिंघ ने भी चीनी फौजियों के साथ टक्कर लेते हुए देश-कौम के लिए शहादत प्राप्त की।

ख़ालसे की कृपाण की इस शूरवीर गाथा ने उन पंथ-विरोधी ताकतों को भी ललकारा है जो आए दिन सिक्खों को कृपाण पहन कर कभी पार्लियामेंट, कभी अदालतों में जाने से रोकती हैं, कभी जहाज़ में चढ़ने से रोकती हैं और कभी सिक्ख बच्चों को कड़ा और कृपाण पहन कर परीक्षा में बैठने से रोकती हैं।

भारत सरकार को चाहिए कि समूचे भारत में स्कूली बच्चों के इतिहास की पाठ्य-पुस्तकों में स. गुरतेज सिंघ की इस बहादुरी भरी गाथा को शामिल किया जाये ताकि बच्चों को पता लग सके कि इस देश की स्वायत्तता के लिए सिक्खों की कृपाण की और इनके ककारों की क्या महत्ता है। यदि देश की आज़ादी की ख़ातिर गौण भूमिका निभाने वाले लोगों की जीवनियां स्कूली बच्चों के पाठ्यक्रम (सिलेबस) में पढ़ाई जा सकती हैं, उन पर फ़िल्में बन सकती हैं, तो देश को पहले मुगलों और फिर अंग्रेज़ों से आज़ाद करवाने वाले असली नायकों— नवाब कपूर सिंघ, सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया, सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया, सरदार बघेल सिंघ, अकाली फूला सिंघ, सरदार शाम सिंघ अटारीवाला, जनरल जगजीत सिंघ (अरोड़ा), जनरल हरबखश सिंघ, स. गुरतेज सिंघ आदि के जीवन के बारे में क्यों नहीं पढ़ाया जा सकता?

वर्तमान समय में देश की एकता-अखंडता को भंग कर देश को 'हिंदू राष्ट्र' बनाने की भद्दी चाल चली जा रही हैं। ऐसी माँग करने वालों पर युआपा (UAPA) लगना चाहिए। यदि निर्दोष सिक्ख नौजवानों को तंग करने की मंशा से उन पर युआपा (UAPA) लग सकता है तो देश की एकता और अखंडता भंग करने वाले आतंकवादियों पर युआपा क्यों नहीं लगाया जा सकता?

—सतविंदर सिंघ फूलपुर
फोन : 99144-19484

जीवन-उद्धार का प्रेरणा स्त्रोत : श्री गुरु ग्रंथ साहिब

*-डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ**

परमात्मा और धर्म की चर्चा सृष्टि के आरंभ से ही किसी न किसी रूप में होती रही है। संसार में सदैव ऐसा घटित होता रहा है जो मानव-क्षमता से बाहर और मानव-बुद्धि से परे रहा है। इससे एक गहरा एहसास बना रहा है कि कोई निराकार शक्ति है जो सृष्टि को चला रही है और सृष्टि का सबसे महत्वपूर्ण तत्व सृजन एवं विनाश का चक्र जिसके हाथ में है। आज भी यही स्थिति कायम है। मनुष्य ने बहुत कुछ अर्जित कर लिया, किन्तु यह मूल प्रश्न उसकी समझ से कोसों दूर है। बहुत-से लोगों ने संसार में ईश्वर या उसका प्रतिनिधि होने का दावा किया, किन्तु वे सभी काल के अधीन संसार से वैसे ही विदा हुए जैसे एक साधारण मनुष्य। धर्म और परमात्मा के नाम पर कितने ही स्थान हैं, जिन्हें पावन माना जाता है। सतियुग से लेकर वर्तमान कलियुग तक, चारों युगों में परमात्मा और धर्म मनुष्य की सारी गतिविधियों में कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में दृष्टिगोचर होता है, कहीं केंद्र में तो कहीं पार्श्व (समीप) में। इसी कारण बहुत-से धर्म अस्तित्व में आये और अपने-अपने ढंग से फले-फूले। सिक्ख धर्म के प्रवर्तक श्री गुरु नानक साहिब ने भी परमात्मा और धर्म से ही अपनी बात आरंभ की। श्री गुरु नानक साहिब की ज्योति आगे नौ गुरु साहिबान में प्रकट हुई। सभी गुरु साहिबान की विलक्षणता थी कि उन्होंने परमात्मा की ही बात की, जिसका कोई रूप, आकार, रंग नहीं था और जो अकेला जन्म-मृत्यु के चक्र, काल से परे, अविनाशी और सर्वव्यापी था। गुरु साहिबान ने दूसरा अद्‌भुत कौतुक किया कि निराकार परमात्मा को शब्दों में प्रत्यक्ष कर मानवता पर महान उपकार किया। उन्होंने कभी अपनी पूजा नहीं कराई, बल्कि सदैव परमात्मा के आगे संपूर्ण समर्पण को प्रेरित किया। श्री गुरु अरजन साहिब ने श्री गुरु नानक साहिब, श्री गुरु अंगद साहिब, श्री गुरु अमरदास जी व श्री गुरु रामदास जी के साथ-साथ स्वयं की उच्चरित बाणी को एक ग्रंथ में समाहित किया। साथ ही उसमें समकालीन पन्द्रह भक्तों, चार गुरसिक्खों व ग्यारह भट्ट साहिबान की बाणी को भी उसमें आदरपूर्ण स्थान दिया। इसमें बाद में श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी तलवंडी साबो में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जोड़ी और ग्रंथ को सम्पूर्ण कर सचखंड श्री हजूर साहिब में गुरुआई पर आसीन किया, जिसके आगे हर सिक्ख श्रद्धा-भावना से परिपूर्ण हो श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में दर्शन को लालायित रहता है। आज जो शोभा श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संसार में है, उसकी कोई जगह नहीं ले सकता। साधारण या भव्यतम भवन के अंदर

**ई-१७१६, राजाजीपुरम, लखनऊ (यू. पी.)-२२६०१७, फोन: ९४१५९-६०५३३*

सर्वोच्च स्थान पर विराजमान श्री गुरु ग्रंथ साहिब, ऊपर तना हुआ चंदोवा, चंवर करता सेवादार, मस्तक टेकने के लिये कतार में लगे सिक्ख श्रद्धालु और हो रहा संगीतमयी कीर्तन एक ऐसे अद्‌भुत दृश्य का सृजन करते हैं जिसे देख कर कोई भी मुग्ध और भावप्रवण हो जाये। संसार में सभी धर्मों के अपने धर्म-ग्रंथ हैं जिनका बहुत आदर- सत्कार होता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब धर्म-ग्रंथ ही नहीं सिक्खों के गुरु भी हैं। जब तक यह सृष्टि है तब तक उनका यह स्थान बना रहने वाला है। जब सिक्ख श्री गुरु ग्रंथ साहिब के समक्ष मस्तक टेकता है तो वास्तव में वह परमात्मा की सत्ता के आगे मस्तक टेक रहा होता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब सिक्ख के लिये परमात्मा के तुल्य है, जहां उसे परमात्मा के दर्शन और कृपा की अभिलाषा रहती है :

पोथी परमेसर का थानु ॥
साधसंगि गावहि गुण गोबिंद पूरन ब्रह्म गिआनु ॥
(पन्ना १२२६)

उपरोक्त वचन श्री गुरु अरजन साहिब का है, जिसमें उन्होंने श्री गुरु ग्रंथ साहिब में परमात्मा का निवास बताया और श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सुशोभित बाणी में परमात्मा का दर्शन कर उसकी कृपा प्राप्त करने की प्रेरणा दी। गुरु साहिब ने कहा कि गुरबाणी द्वारा बताए भक्ति के मार्ग पर चल कर आत्मिक ज्ञान मिलता है और जीवन सफल होता है। आपने कहा कि दिन के आठों पहर मनुष्य सदैव श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी का मनन करे, उसे मन और आचार में धारण करे, क्योंकि इसमें जीवन का सम्पूर्ण दर्शन समाहित है— ''आठ पहर प्रभ के गुण गावह पूरन सबदि बीचारि॥'' श्री गुरु नानक साहिब ने जो बाणी उच्चारण की उसे परमात्मा की बाणी, उसका हुक्म कहा और स्वयं को मात्र उच्चारणकर्त्ता बताया। यह उनकी विनम्रता और उदारता का शिखर था।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब शुभ विचारों की सत्ता के प्रतीक हैं। शुभ विचार ही धर्म हैं और उनको जीवन में धारण करना ही परमात्मा की भक्ति है। यह अद्‌भुत संदेश पूरी मानवता के लिये नितांत नूतन और विस्मयकारी था। उस समय कर्मकांडों, हठ, तप आदि का बोलबाला था, जिससे धर्म का वास्तविक स्वरूप भ्रम और अज्ञान के घोर अँधेरे में कहीं अलोप हो गया था और ढूंढने पर भी दिखाई नहीं दे रहा था। उस समय गुरु साहिबान की बाणी के रूप में ज्ञान का सूर्य उदय हुआ और मानवता को प्रभावकारी संदेश गया :

सुभ बचन बोलि गुन अमोल ॥
किंकरी बिकार ॥
देखु री बीचार ॥
गुर सबदु धिआइ महलु पाइ ॥
हरि संगि रंग करती महा केल ॥ (पन्ना १२२९)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी मनुष्य को शुभ विचारों अर्थात् धर्म के वास्तविक स्वरूप और परमात्मा के महान गुणों से परिचय कराने वाली, उनका बोध कराने वाली है। इससे अंतर चेतना जाग्रत होती है और मनुष्य को अपने अवगुणों एवं पाप-कर्मों का ज्ञान होता है। इससे वह पश्चाताप से भर उठता है। ऐसी स्थिति में गुरबाणी ही उसे

सच्ची सहायक नज़र आती है जो उसे अवगुणों, पापों से उबार कर धर्म, परमात्मा के मार्ग पर चलने की राह दिखाती है। गुरबाणी के अनुसार जब वह धर्म का पालन करता है तभी वह परमात्मा की कृपा का अधिकारी बनता है। जब वह परमात्मा में रम जाता है, उसकी महिमा में रंग जाता है, उसका जीवन सच्चे आनन्द से भर उठता है और सारे शोक, संताप, क्लेश, रोग, दुख मिट जाते हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी मनुष्य की जीवन-दृष्टि और उसके आचार-व्यवहार को पावन एवं गुणात्मक करने की बाणी है। इसमें धर्म का सम्पूर्ण विचार प्रकट हुआ है जो हर दुख से दूर करने में समर्थ है :

सबदु बीचारे सो जनु साचा
जिन कै हिरदै साचा सोई ॥
साची भगति करहि दिनु राती
तां तनि दूखु न होई ॥ १ ॥
भगतु भगतु कहै सभु कोई ॥
बिनु सतिगुर सेवे भगति न पाईऐ
पूरै भागि मिलै प्रभु सोई ॥ *(पन्ना ११३१)*

संसार में अनगिनत लोग हैं जो परमात्मा की भक्ति कर रहे हैं, अपने-अपने ढंग से परमात्मा की कृपा प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं, किन्तु यह इतना सरल नहीं है। जब तक मनुष्य मन में निर्मलता और सहज, संयम, संतोष जैसे गुण धारण नहीं करता तब तक उसे परमात्मा नहीं प्राप्त होता। माया और विकारों का प्रभाव इतना प्रबल है कि कोई भाग्यशाली ही गुरबाणी के अनुसार अपने जीवन को ढाल कर ऐसा कर पाता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी तो बहुत-से लोग सुनते होंगे किन्तु उसे सुन कर विचार करना और मन में दृढ़ संकल्प के साथ धारण करना ही गुरबाणी सुनने का प्रयोजन है। जब गुरबाणी के आदर्शों से मन के विकार मिट जायें और सद्गुणों के लिये स्थान बन जाए तभी परमात्मा की कृपा प्राप्त होती है। विकारों से दूर होना और सद्गुणों का संकल्प पैदा होना ही सच्ची भक्ति है। मनुष्य के अंदर गुण भी हैं और अवगुण भी। अवगुण मनुष्य को सरलता से अपने प्रभाव में ले लेते हैं, जैसे पानी सहज ही नीचे की ओर बहने लगता है, इसके लिये कोई प्रयास नहीं करना पड़ता। मनुष्य का पतन होते देर नहीं लगती। इसके विपरीत पानी को ऊपर ले जाना हो तो विशेष प्रयास और परिश्रम की आवश्यकता होती है। मनुष्य को उत्थान, विकास और मुक्ति प्राप्त करने के लिये बहुत से प्रयत्न करने पड़ते है। अवगुणों से मुक्त होने और गुण धारण कर परमात्मा की भक्ति करने के लिये गुरबाणी ही मार्गदर्शक, प्रेरक और बल देने वाली है :

अवगुणी भरपूर है गुण भी वसहि नालि ॥
विणु सतगुर गुण न जापनी
जिचरु सबदि न करे बीचारु ॥ (पन्ना ९३६)

जब तक मनुष्य गुरबाणी को सुन, पढ़ कर उसे जीवन में धारण नहीं करता उसके अंदर सद्गुण प्रकट नहीं हो सकते। संसार में बहुत-से भक्त, यति-तपी हुए जिनकी वर्षों की साधना विकारों के वश होकर पल भर में ही भंग हो गई। यह श्री गुरु ग्रंथ साहिब के दिखाए मार्ग पर चल कर ही संभव

है, क्योंकि गुरबाणी स्वयं परमात्मा की बाणी है— ''सतिगुर की बाणी सति सति करि जाणहु गुरसिखहु हरि करता आपि मुहहु कढाए॥'' श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी किसी भी दुविधा, भ्रम, संशय से मुक्त और सार्वभौम सच (Universal Truth) की बाणी है। इसे दो तरह से देखा जा सकता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी मनुष्य की हर दुविधा, शंका को दूर करने वाली है। मनुष्य के जीवन के हर पक्ष का निदान, समाधान इसमें मिलता है। यह आरंभ से चली आ रही परंपरा है कि जब भी सिक्खों के सामने कोई दुविधा आई अथवा मत-वैभिन्य हुआ, उन्होंने श्री गुरु ग्रंथ साहिब से हुकमनामा लेकर अपना निदान प्राप्त कर लिया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब से लिये हुकमनामे को सभी ने सहर्ष और एकमत से स्वीकार किया। दूसरा आयाम यह है कि गुरसिक्ख श्री गुरु ग्रंथ साहिब को अपना गुरु मानकर उनकी अधीनता स्वीकार करता है और एक दास, सेवक की तरह उनका सत्कार करता हुआ उनके एक-एक वचन को पूरी आस्था और विश्वास के साथ स्वीकार करता है। उसके लिये श्री गुरु ग्रंथ साहिब के समतुल्य संसार में कुछ भी नहीं है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी गुरसिक्ख के लिये एकमात्र और अंतिम सच है।

गुरसिक्ख के जीवन का एक-एक पल श्री गुरु ग्रंथ साहिब के हुक्म से बंधा हुआ है। नित्य प्रातः संसार भर में जहां भी श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश होता है सर्वप्रथम हुकमनामा लिया जाता है। हुकमनामा गुरसिक्ख के लिये आदेश होता है कि उसे अपना आज का दिन इस हुकमनामे की भावना के अनुसार ही व्यतीत करना है। सच्चा गुरसिक्ख दिन भर मन में उस हुकमनामे की प्रतीति बनाये रखता है। इससे उसका सद् आचरण और श्रेष्ठ गुण प्रेरित होते रहते हैं। उसके मन में अधर्म का विचार ही नहीं आता है। एक दास, सेवक को सदैव अपने स्वामी का आदेश याद रहता है, भले ही स्वामी उसके सामने हो या न हो। उसके मन में तो अपने स्वामी के प्रति आभार का स्थायी भाव पैदा हो जाता है कि उसने सच के दर्शन करा दिये, जिससे मन निर्मल हो गया— ''वाहु वाहु सतिगुरु पुरखु है जिनि सचु जाता सोइ॥ जितु मिलिऐ तिख उतरै तनु मनु सीतलु होइ॥'' गुरबाणी का रंग जिसे लग जाये वही उसका आनन्द जानता है, किन्तु व्यक्त करने में असमर्थ होता है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी मानवता पर बड़े उपकार की तरह है जो गुरु साहिबान ने किया। इसे पढ़ने और सुनने वाले को समाज में और परमात्मा के दरबार में आदर- सम्मान मिलता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का जितना सत्कार है उतना ही सत्कार उसमें सुशोभित बाणी का है, जिसे गुरसिक्ख पूरी श्रद्धा, भावना और एकाग्रता से पढ़ता एवं सुनता है। भावना और एकाग्रता के साथ पढ़ी गुरबाणी ही गुरसिक्ख को परमात्मा की कृपा का पात्र बनाती है :

हरि जन ऊतम ऊतम बाणी
मुखि बोलहि परउपकारे॥
जो जनु सुणै सरधा भगति सेती

करि किरपा हरि निसतारे ॥ (पन्ना ४९३)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी परमात्मा की महिमा का वर्णन करने वाली बाणी है और मनुष्य को पूर्णरूपेण परमात्मा से जुड़ने की प्रेरणा देती है। इसमें परमात्मा के गुणों की विस्तार से व्याख्या मिलती है जो परमात्मा के लिये प्रबल भावना को जन्म देती है। परमात्मा में मन रमने लगता है— ''जनु नानकु बोले गुण बाणी गुरबाणी हरि नामि समाइआ॥'' श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शरण गुरसिक्ख की मर्यादा और शील बन जाता है और गुरबाणी उसका आत्मिक भोजन, जिससे उसे सच्ची तृप्ति प्राप्त होती है— ''कापड़ु पति परमेसरु राखी भोजनु कीरतनु नीति॥''

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की महानता अनंत-अनंत है, जिसे शब्दों में समेटना किसी मनुष्य के लिये संभव नहीं है। गुरसिक्ख जीवन भर श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी पढ़ता, सुनता है और हर बार उसे कोई ऐसा बहुमूल्य तत्व हाथ लगता है जिससे वह विस्मित हो उठता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का उपकार, जिसके लिये मानव समाज सदा ऋणी रहेगा, वो है— एकता और भाईचारे की भावना को मजबूत आधार प्रदान करना। धर्मों, जातियों, वर्णों में बुरी तरह से विभक्त समाज को वेईं नदी से प्रकट होने के बाद श्री गुरु नानक साहिब का पहला संदेश था— ''न को हिंदू न मुसलमान।'' सभी धर्मों ने ईश्वर की कल्पना अपनी कल्पनानुसार की हुई थी और उसका निवास-स्थान भी अपने-अपने ढंग से तय किया हुआ था। इससे बड़े भ्रम की स्थिति बनी हुई थी। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में जिस परमात्मा की चर्चा है वह सद्गुणों से रूपमान होता है। उसके गुण, उसके उपकार उसे सुंदर बनाते हैं। उसका कोई रूप नहीं, फिर भी वह गुणों में आकार लेकर दर्शन देता है। वह सामने नहीं है, किन्तु फिर भी सृष्टि का सृजन, संचालन, पालन और रक्षा करता दिखाई देता है। जब मन गुरबाणी से जुड़ता है तब श्रद्धालु जिस रूप में चाहे उसके दर्शन कर सकता है और कहीं भी दर्शन कर सकता है, अपने आस-पास, अपने मन के अंदर या कहीं भी। वह सभी की सार-संभाल कर रहा है और सभी पर कृपा करने वाला है। यह धर्म-जगत के परिदृश्य को बदल देने वाली घटना थी। लाखों-करोड़ों लोग गुरु साहिबान और श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शरण में आकर सिक्ख बने। यदि एक विश्व समाज की कल्पना की जाए तो श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी को उस समाज के दिग्दर्शक के रूप में स्वीकार करने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं बचता है— ''बाणी त गावहु गुरू केरी बाणीआ सिरि बाणी॥''

संसार को निर्मल मन वाले मनुष्य का समाज बनाने के लिये श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शरण ही सबसे श्रेष्ठ मार्ग है जहां पवित्रता के अथाह भंडार सभी के लिये खुले हुए हैं— ''कहदे पवितु सुणदे पवितु से पवितु जिनी मंनि वसाइआ॥'' यह जीवन-उद्धार का एकमात्र तीर्थ है।

सर्वसाझा व सर्वकालिक : श्री गुरु ग्रंथ साहिब

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

इस संसार में लगभग सभी धर्मों के अपने-अपने सम्माननीय धार्मिक ग्रंथ हैं और उन सभी का आध्यात्मिक क्षेत्र में अपना-अपना विशेष स्थान है। विश्व इतिहास में श्री गुरु ग्रंथ साहिब ही ऐसा अद्वितीय, विशिष्ट, महान ग्रंथ है, जिसे 'गुरु' का रुतबा प्राप्त है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के दिव्य तथा आलौकिक स्वरूप को गुरु साहिबान ने अपने पवित्र हाथों से तैयार किया। इसे संपूर्णता प्रदान की और इसे सुशोभित किया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की महानता, विशेषता, गुरुता अद्वितीय व अतुलनीय है। यह नि:संदेह सिक्खों का महान् गुरु है। इसका पावन संदेश एवं पवित्र उपदेश संपूर्ण मानवता के कल्याण और उद्धार के लिए है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की महिमा का बड़ा कारण इसमें दर्ज गुरबाणी का सरबत्त के भले का संदेश है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब से आगवानी व प्रेरणा लेकर हम अपने जीवन को सफल बना सकते हैं, विश्व में सद्भाव, प्रेम, भाईचारा, परोपकार, सहिष्णुता, नम्रता, दया, सदाचार सहित अनेक अच्छाइयों का प्रसार कर सकते हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की असीम कृपा से अज्ञानता का अंधेरा मिट जाता है और आत्मा ज्ञान के प्रकाश से आलोकित हो उठती है। मन के सभी संदेह, भ्रम मिट जाते हैं; सभी भय मिट जाते हैं।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सृजना का संकल्प श्री गुरु नानक देव जी के समय से ही आरम्भ हो चुका था। उन्होंने स्वयं बाणी उच्चारण की तथा संतों-भक्तों की बाणी को भी इकट्ठा किया। यह बाणी दूसरे, तीसरे, चौथे गुरु साहिब के माध्यम से पांचवे गुरु श्री गुरु अरजन देव जी तक पहुंची और उन्होंने श्री गुरु ग्रंथ साहिब के संपादन, संकलन का कार्य आरंभ किया। श्री गुरु अरजन देव जी को जहां उनकी लासानी शहादत के लिए, बाणी उच्चारण करने के लिए, गुरमति का प्रचार करने के लिए और अन्य कार्यों के लिए स्मरण किया जाता है, वहीं उनके द्वारा श्री गुरु ग्रंथ साहिब के संपादन व संकलन के विलक्षण कार्य के लिए भी अति श्रद्धा से स्मरण किया जाता है। वास्तव में यह बहुत महत्वपूर्ण व ऐतिहासिक कार्य है। उन्होंने श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पावन स्वरूप तैयार करने

**बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४; फोन : ९८७२२-५४९९०*

हेतु श्री अमृतसर साहिब में अति सुंदर स्थान, जहां पर वर्तमान में गुरुद्वारा श्री रामसर साहिब सुशोभित है, को चुना। पांचवे पातशाह स्वयं गुरबाणी लिखवाते और भाई गुरदास जी लिखते जाते अर्थात् लिपिबद्ध करते जाते। श्री गुरु अरजन देव जी का मंतव्य था कि प्रमाणित बाणी को एक जगह इकट्ठा कर प्रमाणित रूप दे दिया जाए, ताकि इसमें कोई अन्य व्यक्ति अप्रमाणित अर्थात् कच्ची बाणी को शामिल न कर सके।

उस समय जब दूर-दूर तक मौजूद गुरु-घर के श्रद्धालुओं को पता चला कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पावन व दिव्य स्वरूप तैयार हो रहा है, तब उनमें अपार श्रद्धा व प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। सिक्खों की तीव्र इच्छा थी कि जल्द से जल्द बीड़ तैयार होकर सुशोभित हो, ताकि संगत इसके दर्शन कर तथा गुरबाणी का जाप कर, गुरबाणी को श्रवण कर आध्यात्मिक लाभ, आत्मिक शुद्धि और आवागमन के चक्कर से मुक्ति प्राप्त कर सके।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के संपादन एवं संकलन-कार्य की संपूर्णता के बाद भादों सुदी एकम, संवत् १६६१ को सचखंड श्री हरिमंदर साहिब में श्री गुरु ग्रंथ साहिब का (प्रथम) प्रकाश किया गया। सेवा-संभाल हेतु गुरु-घर के अनन्य सेवक बाबा बुड्ढा जी को बतौर प्रथम (मुख्य) ग्रंथी नियुक्त किया गया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के स्वरूप को सचखंड श्री हरिमंदर साहिब में सुशोभित करने के लिए विशेष नगर कीर्तन सजाया गया। यह महान परंपरा आज तक कायम है। प्रत्येक वर्ष श्री गुरु ग्रंथ साहिब के प्रथम प्रकाश दिवस पर गुरुद्वारा श्री रामसर साहिब से सचखंड श्री हरिमंदर साहिब तक नगर कीर्तन सजाया जाता है। अकाल पुरख की अपार कृपा से श्री हरिमंदर साहिब में पवित्र गुरबाणी का कीर्तन निरंतर होता है, जिसे साक्षात तथा आधुनिक संचार साधनों द्वारा श्रवण कर देश व विदेश के करोड़ों लोग लाभ प्राप्त करते हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का संदेश व उपदेश सभी वर्गों के लिए साझा है, सर्वव्यापी है। सार्वकालिक सिक्खों के दशम गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरुआई देने से पहले इसमें नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब द्वारा उच्चरित बाणी को शामिल किया। उन्होंने सभी सिक्खों को किसी भी देहधारी को गुरु न मानने का और श्री गुरु ग्रंथ साहिब को ही अपना गुरु मानने का हुक्म किया।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में छः सिक्ख गुरु साहिबान की बाणी के साथ-साथ ग्यारह भट्ट साहिबान, गुरु-घर के चार सम्मानित सिक्खों और पंद्रह भक्त साहिबान की बाणी शामिल है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी संपूर्ण मानवता

के कल्याण व उत्थान के लिए है। सभी प्राणी गुरबाणी के अनमोल वचनों और विचारों से प्रेरणा व आगवानी लेकर अपना जीवन सफल बना सकते हैं, आध्यात्मिक ऊर्जा और परम आत्मिक आनंद प्राप्त कर सकते हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी तो परमात्मा के बोल हैं। ये बोल बाणीकारों के माध्यम से हमें प्राप्त हुए हैं :

—हउ आपहु बोलि न जाणदा
मै कहिआ सभु हुकमाउ जीउ ॥ (पन्ना ७६३)

—सतिगुर की बाणी सति सति करि जाणहु
गुरसिखहु हरि करता आपि मुहहु कढाए ॥
(पन्ना ३०८)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी हमें आध्यात्मिक ज्ञान के साथ-साथ धार्मिक ज्ञान, नैतिक ज्ञान, सामाजिक ज्ञान, राजनीतिक ज्ञान और सर्वोत्तम संस्कारों का ज्ञान बख्शिश करती है; हमें सुसंस्कृत बनाती है और सही मायनों में मानव होने का एहसास पैदा करती है, पशु-वृत्ति से छुटकारा दिलाती है। गुरबाणी हमें हर तरह के अज्ञान के अंधेरे से मुक्ति दिलाती है। ज्ञानी होना अच्छी बात है। ज्ञानवान होना श्रेष्ठ बात है। ज्ञानवान व्यक्ति ब्रह्मत्व को प्राप्त कर लेता है और जीवन के सच्चे व अंतिम उद्देश्य को समझ लेता है। अज्ञानी जीवन भर भटकता रहता है तथा अपना जीवन सार्थक नहीं कर पाता। ज्ञान की प्राप्ति के लिए हमें श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शरण में जाना पड़ेगा :

गुरबाणी इसु जग महि चानणु करमि वसै मनि आए ॥
(पन्ना ६७)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी हमें परमेश्वर के द्वार तक ले जाती है और उसकी बातें बताती है, उसे खोजने व पाने का रास्ता एवं ढंग बताती है। यह तभी संभव है, जब हम सच्चे मन से एकाग्रचित्त होकर गुरबाणी पढ़ेंगे, गुरबाणी सुनेंगे, इसे आत्मसात करेंगे। हमें जो मार्ग गुरबाणी सुझाती व दिखाती है, उस मार्ग पर चलकर ही हमें अपना जीवन व्यतीत करना है। अगर मनुष्य यह शुभ विचार सुनकर कमा ले, तब उसका पारउतारा हो जाता है, जन्म-मरण का चक्कर खत्म हो जाता है और वह निरंकार में समा जाता है :

जन नानकु बोले ब्रहम बीचारु ॥
जो सुणे कमावै सु उतरै पारि ॥
जनमि न मरै न आवै न जाइ ॥
हरि सेती ओहु रहै समाइ ॥ (पन्ना ३७०)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में वर्णित गृहस्थ-जीवन

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल**

गृहस्थ : अर्थ

गृहस्थ का शाब्दिक अर्थ है— 'गृह में स्थित' अर्थात् जो मनुष्य अपना घर-परिवार बना कर बहुविधि उसका पालन-पोषण करता है, गृहस्थ कहलाता है। दरअसल गृहस्थ मानव-जीवन की एक अवस्था है जो लगभग युवावस्था में उस समय प्रारम्भ होती है जब एक जीवन-साथी को चुनकर विवाह कर लिया जाता है और फिर समस्त जीवन इस संयोग से उत्पन्न संतान और परिवार का पालन किया जाता है।

भारतीय दर्शन-परंपरा में गृहस्थ की स्थिति

भारतीय दर्शन-परंपरा में गृहस्थी व्यक्ति को हमेशा से ही दूसरे दर्जे का जीव माना गया है। वैदिक-ब्राह्मण धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म सहित लगभग सभी धर्मों में और मत-मतांतरों में गृहस्थी को काम, क्रोध, मोह और माया में फंसा हुआ प्राणी कहा गया है और इसके मुकाबले घर-संसार छोड़कर संन्यास या वैराग्य धारण कर लेने वालों को श्रेष्ठ, उच्च और आध्यात्मिक ज्ञान के धारक माना गया है। यह अलग बात है कि इन तथाकथित सन्यासियों का गुज़ारा उन्हीं माया-मोह में फंसे दूसरे दर्जे के प्राणियों (गृहस्थियों) से मिली भिक्षा से ही चलता था।

''उपनिषदों के अनुसार सारी सृष्टि और इसका कार्य-व्यवहार माया है। इस माया में फंसा हुआ मनुष्य अच्छे-बुरे कर्मों के फलस्वरूप आवागमन के चक्कर में पड़ा रहता है। अत: मोक्ष प्राप्त करने के लिए उसे सर्वप्रथम सांसारिक कार्य-व्यवहार त्याग कर सन्यासी-वैरागी बन जाना चाहिए।''[१]

''जैन दर्शन के अनुसार भी मोक्ष की साधना केवल सन्यासी ही कर सकते हैं। 'पंच परमेष्ठी' के नाम से पुकारे जाने वाले अर्हत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय एवं साधु ही जैन मत के अनुसार कैवल्य के अधिकारी हो सकते हैं।''[२]

''बौद्ध धर्म में भी 'निर्वाण' गृह-त्याग के उपरान्त ही प्राप्त हो सकता है।''[३]

भारतीय दर्शनों में 'गृहस्थी' को कितना निचले दर्जे का प्राणी माना जाता था, इस संदर्भ में रामधारी सिंह दिनकर की पुस्तक 'संस्कृति के चार अध्याय' का यह उदाहरण उल्लेखनीय है—''परंपरा से ही यह बात इस देश में प्रचलित थी कि जीवन का परम उद्देश्य मोक्ष है और मोक्ष सन्यास से प्राप्त होता है। स्पष्ट ही यह सिद्धान्त गृहस्थ के पद को नीचे ले आने वाला सिद्धान्त है। गृहस्थ को लोग बहुत हद तक हीनता के अनिवार्य कारण के रूप में देखते थे और हर गृहस्थी के मन में यह भाव रहता था कि कब उसे सुयोग्य अवसर मिले और वह सन्यासी बन जाये।''

''भक्तों और योगियों ने सन्यास की जगह भक्ति और योग को अवश्य ही स्थापित किया, परंतु जहां तक सांसारिक कर्मों का संबंध था, सबने उसे त्याज्य ही माना।''[४]

गुरमत में गृहस्थ का स्थान

श्री गुरु नानक देव जी ने पहली बार 'गृहस्थी' को

**१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : ९४१७२-७६२७१*

उसका वास्तविक आदर-सम्मान प्रदान किया, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण है कि गुरु साहिबान स्वयं भी गृहस्थी थे। गुरमत में अपने हाथों से किरत-कमाई कर अपने घर-परिवार का पालन करने वाले गृहस्थी को सर्वोच्च पद प्रदान किया गया है। वहीं दूसरी ओर अपने घर-परिवार की जिम्मेदारी से भाग कर, दूसरों पर बोझ बन कर, भिन्न-भिन्न वेशों में ईश्वर की खोज में भटकने की अनावश्यक कसरत करने वालों का प्रबल निषेध किया गया है।

श्री गुरु नानक देव जी ने स्पष्ट कहा कि योगी आदि विभिन्न वेशों में जगह-जगह भटकते फिरते हैं, परन्तु गुरु के शबद और तत्व-सार को नहीं जानते कि प्रभु घट-घट में निवास करता है। तपस्वी वन में तप करते हैं और तीर्थों में रहते हैं। गुरु के शबद से विहीन भ्रम में पड़े आवागमन में फंसे रहते हैं। सबसे अच्छा गृहस्थी वही है जो साधु-जन की सेवा करते हुए गुरमत की ओर लगा रहता है; नाम, दान, स्नान आदि के माध्यम से भक्ति में दृढ़तापूर्वक लगा रहता है। वह कभी भी वाहिगुरु को मन से नहीं बिसारता। ऐसे गृहस्थी के घर को तो गुरु का दर ही समझना चाहिए :

जोगी भोगी कापड़ी किआ भवहि दिसंतर ॥
गुर का सबदु न चीन्हही ततु सारु निरंतर ॥३ ॥
पंडित पाधे जोइसी नित पड़हि पुराणा ॥
अंतरि वसतु न जाणन्ही घटि ब्रहमु लुकाणा ॥४ ॥
इकि तपसी बन महि तपु करहि नित तीरथ वासा ॥
आपु न चीनहि तामसी काहे भए उदासा ॥५ ॥
इकि बिंदु जतन करि राखदे से जती कहावहि ॥
बिनु गुर सबद न छूटही भ्रमि आवहि जावहि ॥६ ॥
इकि गिरही सेवक साधिका गुरमती लागे ॥
नामु दानु इसनानु द्रिड़ु हरि भगति सु जागे ॥७ ॥
गुर ते दरु घरु जाणीऐ सो जाइ सिञाणै ॥
नानक नामु न वीसरै साचे मनु मानै ॥ (पन्ना ४१९)

'भगत रतनावली' में भी ज़िक्र आता है कि सिक्ख जग्गा श्री गुरु अमरदास जी की शरण में गया और अरदास की कि ''यदि आप आज्ञा दें तो घर-बार त्याग कर फ़कीर बन जाऊं ? मुझे एक योगी ने कहा है कि घर-बार बंधन होता है। पहले घर का त्याग करो फिर मैं उपदेश दूंगा।'' तब गुरु साहिब बोले कि ''अगर योग धारण कर, घर त्याग कर उद्धार होता तो क्यों फकीर दर-दर झगड़ते फिरते ? जैसे कमल जल में रहकर सूरज की ओर ध्यान रखता है वैसे ही गुरमुख गृहस्थ में रहते हैं और गुरु के आदेशानुसार सेवा-कार्य करते हैं। (देखें पन्द्रहवीं पउड़ी, 'भगत रतनावली,' भाई मनी सिंघ जी कृत)

गृहस्थ जीवन : सर्वोत्तम साधना- स्थल

गुरमत गृहस्थ धर्म को सेवा-सिमरन और अकाल पुरख के आराधन का सर्वोत्तम स्थान मानता है। गुरबाणी स्पष्ट रूप से घोषित करती है कि अकाल पुरख से मिलन और मोक्ष का द्वार गृहस्थ-धर्म का पालन करते हुए ही प्राप्त हो सकता है :

नानक सतिगुरि भेटिऐ पूरी होवै जुगति ॥
हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ
विचे होवै मुकति ॥ (पन्ना ५२२)

अक्सर यह समझ लिया जाता है कि गृहस्थ माया-मोह-काम-क्रोध-लोभ में फंसे रहने का दूसरा नाम है। वैसे भी घर की ज़िम्मेदारियों को पूरा करने के नाम पर थोड़ी-बहुत ठगी-लालच और थोड़े-बहुत माया-मोह को स्वीकार कर लिया जाता है, परंतु यह सब उचित नहीं है। काम-क्रोध-लोभ-मोह आदि विकार जहां भी, जितनी भी मात्रा में हों, निषिद्ध हैं। गुरमत गृहस्थ में रहकर भी उच्च आदर्श जीवन जीने की युक्ति बताती है। गुरु साहिबान ने जप, तप, संयम, पुण्य, दान आदि गुणों से युक्त गृहस्थ को श्रेष्ठ माना है। उन्होंने ऐसा गृहस्थी बनने पर जोर दिया

है जो गृहस्थ में रह कर भी जल में कमल की भांति निर्लेप रहे, उदास रहे :

—सो गिरही जो निग्रहु करै ॥
जपु तपु संजमु भीखिआ करै ॥
पुंन दान का करे सरीरु ॥
सो गिरही गंगा का नीरु ॥ *(पन्ना ९५२)*
—मन रे ग्रिह ही माहि उदासु ॥
सचु संजमु करणी सो करे गुरमुखि होइ परगासु ॥
(पन्ना २६)
—विचे ग्रिह सदा रहै उदासी जिउ
कमलु रहै विचि पाणी हे ॥ *(पन्ना १०७०)*

गुरमत गृहस्थ में रह कर खाना-पीना-पहनना सब स्वीकार करती है, परंतु यदि यह सब अकाल पुरख को भुला कर किया जाये तो प्रवान नहीं। ऐसा खाना-पीना-पहनना अपवित्र है :

सो किउ मनहु विसारीऐ जा के जीअ पराण ॥
तिसु विणु सभु अपवित्र है जेता पैनणु खाणु ॥
(पन्ना १६)

गृहस्थ धर्म : सर्वोत्तम धर्म

गुरमत के अनुसार गृहस्थ धर्म ही सर्वश्रेष्ठ धर्म है। सिक्ख-धर्म का मूल उद्देश्य— 'सरबत का भला' गृहस्थ धर्म में रह कर, संसार में विचरण करके ही प्राप्त किया जा सकता है, संसार को त्याग कर नहीं। संसार का त्याग करने वाला कभी संसार के भले के विषय में कुछ सोच या कर नहीं सकता। गृहस्थी ही संसार में रहते हुए अपने घर और समाज की भलाई के लिए काम कर सकता है। श्री गुरु नानक देव जी का फरमान है कि जो समाज में रहकर संघर्ष और भलाई करता है, वही सच्चे मार्ग को पहचान पाता है :

घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ *(पन्ना १२४५)*

उपर्युक्त तथ्य की पुष्टि करते हुए स्वामी विवेकानंद ने व्यंग्यपूर्ण लहजे में कहा है कि ''सन्यास के विरुद्ध एक बात मुझे भी सूझती है कि यह सारे बुद्धिमान व्यक्तियों को समाज से अलग कर देता है।''[५].

गुरमत के द्वारा गृहस्थ धर्म को सर्वोत्तम धर्म मानने के पीछे एक और सशक्त सैद्धान्तिक आधार है। वो यह कि अकाल पुरख स्वयं गृहस्थी है, सबसे बड़ा गृहस्थी, संसार के समस्त प्राणी जिसकी संतान हैं— एकु पिता एकस के हम बारिक. . .॥'' जिस धर्म पर स्वयं अकाल पुरख की मुहर लगी हुई है वह (गृहस्थ) धर्म क्यों न सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ, सर्वोच्च हो? भाई गुरदास जी का कथन है :

जैसे सर सरिता सकल मै समुंद्र बडो,
मेर मै सुमेर बडो जगतु बखान है।
तरवर बिखै जैसे चंदन बिरखु बडो,
धातु मै कनक अति उत्तम कै मान है।
पंछीअन मै हंस मृिगराजन मै सारदूल
रागन मै सिरीरागु पारस पखान है ।
गिआनन में गिआनन अरु धिआनन मे धिआन गुरु
सकल धरम मै ग्रिहसतु प्रधान है।३७६ ।
(कबित्त सवैये, भाई गुरदास जी)

अर्थात् जैसे सर-सरिता में समुद्र, पर्वतों में सुमेरु, वृक्षों में चंदन, धातुओं में स्वर्ण, पक्षियों में हंस, जंगली जन्तुओं में शेर और ज्ञान-ध्यान में गुरु सर्वश्रेष्ठ होता है, उसी प्रकार सभी धर्मों में गृहस्थ धर्म उत्तम है।

संदर्भ-संकेत :

१. डॉ. राधाकृष्णन, भारतीय दर्शन, दिल्ली : राजपाल एंड संस, १९६६, पृष्ठ २१८
२. वही, पृष्ठ ३०४-०५
३. वही, पृष्ठ ४११
४. रामधारी सिंह दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय, पृष्ठ ५९
५. रामधारी सिंह दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय, पृष्ठ ६८९

गुरबाणी चिंतनधारा . . . १३०

सिध गोसटि : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

कवन मुखि चंदु हिवै घरु छाइआ ॥
कवन मुखि सूरजु तपै तपाइआ ॥
कवन मुखि कालु जोहत नित रहै ॥
कवन बुधि गुरमुखि पति रहै ॥
कवनु जोधु जो कालु संघारै ॥
बोलै बाणी नानकु बीचारै ॥ ४८ ॥ (पन्ना ९४३)

४८वीं पउड़ी में भी योगी श्री गुरु नानक पातशाह से रहस्यमयी बातों के उत्तर जानने की जिज्ञासा से प्रश्न करते हैं कि वह कौन-सा साधन है जिससे शीतलता का घर चंद्रमा अर्थात् शांति अपना प्रभाव बनाए रखे? किस तरह सूर्य की तपिश रहे और किस साधन से मृत्यु का भय दूर हो?

इस पावन पउड़ी में सिधों का रहस्यात्मक सवाल था कि किस प्रकार चंद्रमा रूपी मन ठंडक से भरपूर रहे अर्थात् किस प्रकार घर में हमेशा शांति बनी रहे? पहली पंक्ति में आए 'छाइआ' शब्द का अर्थ कुछ विद्वानों ने गुफा की तरह अंधकार वाला माना है। इस आशय से इस पंक्ति का अर्थ यह हुआ कि किस प्रकार चंद्रमा रूपी मन ठंडक का घर और गुफा की तरह अंधकार वाला बना रहता है? किस प्रकार ज्ञान का सूर्य उदित होकर प्रचंड होता है अर्थात् ज्ञान का प्रकाश सदैव कैसे बना रहता है? किस प्रकार काल (मौत) नित्य तकना छोड़ देता है अर्थात् किस प्रकार मृत्यु का भय, जो हर समय बना रहता है, वह दूर हो सकता है? वह किस तरह की बुद्धि है जिसके कारण गुरमुख व्यक्ति का मान-सम्मान बना रहता है? वह कौन-सा शूरवीर योद्धा है जो मृत्यु के भय को मार लेता है? हे नानक! इन प्रश्नों का विचारपूर्वक अपनी बाणी द्वारा उत्तर दो!

उपरोक्त पउड़ी में कितने बड़े गहन प्रश्न किये गये हैं। कितनी भी कठिन साधना क्यों न कर ली जाए, अगर मन में सुकून न आये तो समस्त जप-तप व्यर्थ हैं। सिधों ने गुरु पातशाह से प्रश्न किया कि किस प्रकार मनुष्य के मन में शक्ति कायम रहे और ज्ञान की प्रचण्डता बनी रहे अर्थात् मन-बुद्धि में ज्ञान का उजाला कायम रहे, जिसके फलस्वरूप जीवन में किसी भी परिस्थिति में भटकना न रहे? जैसे बाहरी अंधेरा दीपक के जलने से दूर हो जाता है वैसे ही अंदर का अंधकार ज्ञान रूपी दीपक से दूर हो सकता है। ऐसा कौन-सा शूरवीर है जो मौत के भय को भी मार सकता हो? इन समस्त प्रश्नों के उत्तर गुरु पातशाह ने बड़ी सहजता से विवेकपूर्ण ढंग से ४९वीं पउड़ी में प्रस्तुत किये हैं और गुरु-शबद

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

की महिमा का बखान किया है।

सबदु भाखत ससि जोति अपारा ॥
ससि घरि सूरु वसै मिटै अंधिआरा ॥
सुखु दुखु सम करि नामु अधारा ॥
आपे पारि उतारणहारा ॥
गुर परचै मनु साचि समाइ ॥
प्रणवति नानकु कालु न खाइ ॥ ४९ ॥

(पन्ना ९४३)

४८वीं पउड़ी में पूछे गए सिधों के गहन प्रश्नों का बड़ी सहजता से सुंदर जवाब देते हुए गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि जैसे-जैसे मनुष्य गुरु के शबद को मन में बसाता है उसके अन्तर्मन में शांति पैदा होने लगती है। शांत हृदय में ही ज्ञान का सूर्य उदय होता है और अंदर से अज्ञान का सम्पूर्ण अंधकार दूर हो जाता है । गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि (गुरु का) शबद उच्चारण करते ही चन्द्रमा रूपी मन की क्षीण हुई ज्योति में अपार प्रकाश भर जाता है अर्थात् हृदय में शांति का संचार हो जाता है। जिस प्रकार चन्द्रमा सूर्य से रौशनी लेकर, उसके प्रकाश से प्रकाशित होकर अपना अंधेरा दूर करता है उसी प्रकार मन का अंधकार गुरु-शबद से रोशनी लेकर दूर हो जाता है अर्थात् शांत हृदय में ज्ञान का सूरज उदित होकर अज्ञानता का तिमिर मिटा देता है। गुरु-शबद की बदौलत जब कोई गुरमुख सुख और दुख में एक-सी अवस्था में रहता है तथा ईश्वर के नाम को ही जिंदगी का असली आधार मानता है अर्थात् सुख और दुख किसी भी परिस्थिति में जब प्रभु को नहीं भुलाता तब दयालु प्रभु स्वयं ही ऐसे जीव को भवसागर से पार उतार देता है। श्री गुरु नानक देव जी विनम्रता सहित विनती करते हैं कि गुरु द्वारा सन्तुष्ट हुआ मन सत्य में लीन हो जाता है। इसके फलस्वरूप काल व्यक्ति को खाता नहीं है अर्थात् मौत का भय दूर हो जाता है।

गुरबाणी में अन्यत्र भी जीव को सुख-दुख में सम रूप रहने की प्रेरणा दी गई है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब की पावन बाणी में संदेश है— जिस व्यक्ति को सुख-दुख स्पर्श नहीं कर सकते, लोभ, मोह, अहंकार भी जिस पर अपना प्रभाव नहीं डाल सकते अर्थात् हर अवस्था में अडोल रहने वाले मनुष्य को ईश्वर का ही रूप जानो :

सुखु दुखु जिह परसै नही लोभु मोहु अभिमानु ॥
कहु नानक सुनु रे मना सो मूरति भगवान ॥

(पन्ना १४२७)

वैसे भी विकारों के कारण अन्तर्मन का उजाला जब कम होने लगता है तब गुरु-शबद का प्रकाश जीव का मार्गदर्शन करता है।

ज्ञान का दीपक जलते ही अज्ञानता का अंधेरा मिट जाता है :

दीवा बलै अंधेरा जाइ ॥
बेद पाठ मति पापा खाइ ॥
उगवै सूरु न जापै चंदु ॥
जह गिआन प्रगासु अगिआनु मिटंतु ॥. . .
नानक गुरमुखि उतरसि पारि ॥१ ॥

(पन्ना ७९१)

अर्थात् यदि ज्ञान का दीपक जल उठे तो अज्ञान का अंधेरा दूर हो जाता है। ज्ञान का पाठ

पढ़ने-सुनने से पाप करने वाली मति नष्ट हो जाती है। जब ज्ञान का सूरज चमक उठता है तो चन्द्रमा की जड़ता दूर हो जाती है। रहस्य को जाने बिना कोरा ज्ञान पथ-भ्रष्ट करता है। गुरमुख बन कर ही भवसागर से पार उतरा जा सकता है।

शबद रूपी ज्ञान को प्राप्त कर ही गुरमुख-जन भवसागर से पार उतर सकते हैं।

नाम ततु सभ ही सिरि जापै ॥
बिनु नावै दुखु कालु संतापै ॥
ततो ततु मिलै मनु मानै ॥
दूजा जाइ इकतु घरि आनै ॥
बोलै पवना गगनु गरजै ॥
नानक निहचलु मिलणु सहजै ॥५०॥

(पन्ना ९४३)

५०वीं पउड़ी में श्री गुरु नानक देव जी ने प्रभु-सिमरन के महत्व पर प्रकाश डाला है। नाम-सिमरन के फलस्वरूप ईश्वरीय जीवन की एक लहर-सी चल पड़ती है। इस प्रकार प्रभु से जीव का मिलाप निश्चित हो जाता है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि परमेश्वर का नाम शिरोमणि जाप है अर्थात् प्रभु-नाम की सच्चाई हृदय में समा जाना ही सर्वोत्तम जाप है। प्रभु-नाम से विहीन लोगों को काल का दुख और संताप भोगना पड़ता हैं। जब जीव रूपी तत्व परमात्मा-तत्व में विलीन हो जाता है तो मन सन्तुष्ट हो जाता है और परमेश्वर का नाम हृदय-घर में बस जाता है। हृदय-घर में केवल प्रभु-नाम ही सदा स्थिर रहने वाला है। जीव का मन इस अटल सच्चाई से पसीज जाता है और तेरा-मेरा वाला स्वभाव दूर हो जाता है। मनुष्य एकता के घर में आ टिकता है। दैवी जीवन की लहर चल पड़ती है और ईश्वरीय मिलाप की अवस्था बलशाली हो जाती है। गुरु पातशाह अन्तिम पंक्ति में स्पष्ट करते हैं कि इस प्रकार सहज अवस्था में टिकने से जीवात्मा और परमात्मा का मिलाप सदा के लिए परिपक्व हो जाता है।

परमेश्वर अनंत है। उसकी महिमा एवं गुण बेअंत हैं। चिंतकों के चिन्तनानुसार परमेश्वर का अंत नहीं पाया जा सकता और न ही अनंत गुणों के मालिक प्रभु का अंत पाना किसी के जीवन का मकसद है। केवल और केवल गुरु-कृपा से द्वैत-भाव मिटा कर जीवात्मा का परमात्मा में लीन हो जाना ही मानव जीवन का परम लक्ष्य है। इसी भाव को इस पउड़ी में दृढ़ करवाया गया है। परमेश्वर की लीला अपरम्पार है। जिसे वो यह समझ प्रदान करता है उसे अपने में ही लीन कर लेता है। सुखमनी साहिब बाणी में भी इसी भाव के दर्शन होते हैं :

—अनिक कला लखी नह जाइ ॥
जिसु भावै तिसु लए मिलाइ ॥
कवन निकटि कवन कहीऐ दूरि ॥
आपे आपि आप भरपूरि ॥
अंतरगति जिसु आपि जनाए ॥
नानक तिसु जन आपि बुझाए ॥ *(पन्ना २९४)*
—अंतरि सुंनं बाहरि सुंनं त्रिभवण सुंन मसुंन ॥
चउथे सुंनै जो नरु जाणै ता कउ पापु न पुंन ॥
घटि घटि सुंन का जाणै भेउ ॥
आदि पुरखु निरंजन देउ ॥

जो जनु नाम निरंजन राता ॥
नानक सोई पुरखु बिधाता ॥५१ ॥ (पन्ना ९४३)

५१वीं पउड़ी में श्री गुरु नानक पातशाह ने नाम-सिमरन की बरकतों का जिक्र किया है, क्योंकि नाम-सिमरन की बदौलत ही माया में रहता हुआ जीव माया के प्रभाव से रहित रहता है अर्थात् माया में गलतान नहीं होता। दुनियावी कार-व्यवहार करता हुआ भी जीव माया के मोह से उपराम रहता है।

श्री गुरु नानक देव जी पावन फरमान करते हैं कि जीव के अन्दर और बाहर गुप्त एवं प्रकट रूप में परमेश्वर व्यापक है। शून्य एवं स्थिर अवस्था में तीनों लोकों में ईश्वर विद्यमान है। जो मनुष्य त्रिगुणी माया के प्रभाव से ऊँचा रहने वाले परमेश्वर को सही रूप में समझ लेता है, ऐसा व्यक्ति ही चौथी अवस्था में स्थिर होने के कारण, पाप एवं पुष्य को महसूस नहीं करता अर्थात् कोई पाप-कर्म उसे जीवन-मार्ग से भटका नहीं सकता और कोई भी पुण्य-कर्म उसके अन्दर किसी स्वर्ग आदि की लालसा पैदा नहीं करता। ऐसे में जीव पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक के विचार से ऊपर उठ जाता है। चौथे पद को प्राप्त होने पर पाप-पुण्य उसे छू भी नहीं सकते।

जो व्यक्ति घट-घट में निवास करने वाले प्रभु का रहस्य जान लेता है वह माया के प्रभाव से विरक्त प्रभु का ही रूप हो जाता है। जो व्यक्ति प्रत्येक हृदय में मौजूद निर्भय स्वरूप परमेश्वर का भेद जान लेता है वही व्यक्ति परिवार में रहते हुए भी निर्लिप्त भाव से विचरण करता है और प्रभु का ही रूप हो जाता है। गुरु पातशाह अन्तिम पंक्ति में पावन संदेश देते हैं कि जो मनुष्य प्रभु के नाम में लीन रहता है वह विधाता प्रभु का ही रूप हो जाता है।

दुनिया के समस्त पदार्थों पर त्रिगुणी माया (रजोगुणी, सतोगुणी एवं तमोगुणी) का किसी न किसी रूप में प्रभाव है। केवल परमेश्वर एवं उसका नाम ही माया के प्रभाव से परे है। जपु जी साहिब पावन बाणी में इस सदर्भ में पावन फरमान है :

ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥ (पन्ना ३)

शर्त यही है कि माया के प्रभाव से रहित परमेश्वर की सर्वव्यापकता का वर्णन गुरबाणी में बारंबार आया है :

जलि थलि महीअलि सरब निवासी
नानक रमईआ ढीठा ॥ (पन्ना ६७१)

ऐसी अवस्था में पहुंचे मनुष्य की ख्वाहिश केवल और केवल प्रभु-चरणों की प्रीति की रह जाती है। उसे और कुछ भी अच्छा नहीं लगता :

राजु न चाहउ मुकति न चाहउ
मनि प्रीति चरन कमलारे ॥ (पन्ना ५३४)

ऐसी उच्चावस्था किसी भाग्यशाली को ही नसीब होती है।

सुंनो सुंनु कहै सभु कोई ॥
अनहत सुंनु कहा ते होई ॥
अनहत सुंनि रते से कैसे ॥
जिस ते उपजे तिस ही जैसे ॥
ओइ जनमि न मरहि न आवहि जाहि ॥

नानक गुरमुखि मनु समझाहि ॥५२ ॥

(पन्ना ९४३)

५२वीं पउड़ी में गुरु पातशाह इस रहस्य का उद्घाटन कर रहे हैं कि ५१वीं पउड़ी में जिस अवस्था का वर्णन किया है वो है अफुर अवस्था, जहां किसी तरह के विचार नहीं उठते। ऐसा जीवन तभी जीया जा सकता है जब इस अवस्था की सूझ पैदा हो जाए। इस अवस्था पर पहुंचे हुए व्यक्ति ही परमेश्वर का रूप हो जाते हैं अर्थात् उसी में अभेद हो जाते हैं।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि आम जन अफुर अवस्था का जिक्र तो करता है, लेकिन इस रहस्य को कोई विरला ही जानता है कि सदा स्थिर रहने वाली अफुर (विशुद्ध रूप, जहां माया, धन-दौलत आदि के संकल्प-विकल्प आदि न उठें) अवस्था वाला जीवन जीने वाले को ही इस अवस्था की समझ पड़ सकती है। यदि कोई सवाल करे कि अफुर अवस्था वाले लोग कैसे होते हैं तो इसका सही जवाब होगा कि वे परमेश्वर जैसे ही होते हैं अर्थात् इस अवस्था में आकर परमेश्वर तथा इंसान में कोई भिन्न-भेद नहीं रह जाता। जिस परमेश्वर से वे पैदा हुए हैं उसी का ही रूप हो जाते हैं। श्री गुरु नानक देव जी अन्तिम पंक्ति में पावन फरमान करते हैं कि ऐसे जीव न जन्म लेते हैं, न ही मृत्यु को प्राप्त होते हैं, अत: वे आवागमन के चक्कर में नहीं पड़ते। ऐसे व्यक्ति (गुरमुखजन) अपने मन को समझा लेते हैं।

उपरोक्त पउड़ी के आशयानुसार भक्त कबीर जी ने पावन सलोकों में इस संदर्भ में रहस्य उद्घाटित किया है कि हरि-जन बिलकुल वैसा ही होना चाहिए जैसा परमेश्वर स्वयं है :

कबीर रोड़ा होइ रहु बाट का
तजि मन का अभिमानु ॥
ऐसा कोई दासु होइ ताहि मिलै भगवानु ॥१४६ ॥
कबीर रोड़ा हूआ त किआ भइआ
पंथी कउ दुखु देइ ॥
ऐसा तेरा दासु है जिउ धरनी महि खेह ॥१४७ ॥
कबीर खेह हूई तउ किआ भइआ
जउ उडि लागै अंग ॥
हरि जनु ऐसा चाहीऐ जिउ पानी सरबंग ॥१४८ ॥
कबीर पानी हूआ त किआ भइआ
सीरा ताता होइ ॥
हरि जनु ऐसा चाहीऐ जैसा हरि ही होइ ॥१४९ ॥

(पन्ना १३७२)

भक्त कबीर जी पावन फरमान करते हैं कि हे मनुष्य! तू मन का अभिमान त्याग कर रास्ते का पत्थर बन जा। यदि पत्थर बन भी गया तो आने-जाने वाले मुसाफिरों को दुख पहुंचाएगा। हे प्रभु! तेरा दास तो मिट्टी जैसा होना चाहिए। फिर भक्त कबीर जी कहते हैं कि मिट्टी भी बन गया तो राहगीरों के तन को मैला करेगा। प्रभु का दास तो पानी जैसा होना चाहिए। नहीं, पानी भी कभी गर्म होगा, कभी ठण्डा। प्रभु का सेवक तो ऐसा होना चाहिए, जैसा प्रभु स्वयं है।

वास्तव में मनुष्य-जीवन का यही परम लक्ष्य एवं उद्देश्य होना चाहिए कि वह प्रभु का रूप होकर उसी में लीन हो जाए।

भाई गुरदास जी : जीवन-परिचय और गुरमति-सेवा

-डॉ. नवरत्न कपूर (दिवंगत)

जीवन-परिचय : भाई गुरदास जी का सिक्ख गुरु साहिबान के साथ घनिष्ठ पारिवारिक संबंध था। संबंधों की दृष्टि से वे तीसरे गुरु श्री गुरु अमरदास जी के भतीजे और माता भानी जी के चचेरे भाई थे। भाई गुरदास जी पंचम गुरु साहिब श्री गुरु अरजन देव जी के मामा थे।

भाई गुरदास जी के पिता का नाम भाई दातार जी तथा माता का नाम माता जीऊणी जी था।[१] (कुछ विद्वान आपके पिता का नाम ईशरदास बताते हैं।) भाई साहिब का जन्म पंजाब के तरनतारन नगर से २० किलोमीटर की दूरी पर स्थित गोइंदवाल कसबे (जिला तरनतारन) सन् १५५१ ई. में हुआ था। प्रो. किरपाल सिंघ के अनुसार आपका पैतृक-स्थान गांव बासरके (ज़िला श्री अमृतसर) में था।[२] भाई गुरदास जी को तीन वर्ष की अवस्था में पितृ-विछोह और बारह वर्ष की अवस्था में मातृ-विछोह सहना पड़ा। फलतः इनका लालन-पालन और शिक्षा-दीक्षा इनके ताऊ श्री गुरु अमरदास जी की छत्र-छाया में हुई। आप संस्कृत, अरबी, फारसी तथा पंजाबी भाषाओं पर पूर्ण अधिकार रखते थे। श्री गुरु अमरदास जी ने ही आपको सन् १५७९ ई. में सिक्ख धर्म में दीक्षित किया था।[३] कहते हैं कि ३० सितंबर, सन् १५७८ ई. को मुग़ल सम्राट अकबर ने सर्वधर्म-सम्मेलन का आयोजन किया था। इसी सम्मेलन में लिए गए निर्णयों को ध्यान में रखकर सम्राट अकबर ने 'दीन-ए-इलाही' की स्थापना की थी। आप सिक्ख धर्म के प्रचार हेतु कश्मीर, लाहौर, आगरा और काशी भी गए थे।[४]

श्री गुरु अमरदास जी तथा उनके परवर्ती तीन गुरु साहिबान सहित चार सिक्ख गुरुओं के दर्शन एवं उनके साथ जीवन-यापन करने का सौभाग्य भाई गुरदास जी को प्राप्त हुआ था। इनकी वारों में श्री गुरु नानक देव जी से लेकर छठे गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब तक की महिमा का वर्णन मिलता है :

सतिगुरु नानक देउ है परमेसरु सोई।
गुरु अंगदु गुरु अंग ते जोती जोति समोई।
अमरा पदु गुरु अंगदहुं हुइ जाणु जणोई।
गुरु अमरहुं गुरु रामदास अंम्रित रसु भोई।
रामदासहुं अरजनु गुरू गुरु सबद सथोई।
हरिगोविंद गुरु अरजनहुं गुरु गोविंदु होई।
गुरमुखि सुख फल पिरम रसु सतिसंग अलोई।
गुरु गोविंदहुं बाहिरा दूजा नही कोई ॥२०॥

(वार ३८:२०)

सन् १६३७ ई. में लगभग ८६ वर्ष की आयु में भाई साहिब का देहावसान हो गया और श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने इनके शरीरांत की रस्में पूरी की थीं। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब अपने सिक्ख

श्रद्धालुओं समेत श्री अमृतसर पधारे। वहीं पर श्री अकाल तख्त साहिब में श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पाठ की ज़िम्मेदारी भाई बिधीचंद ने निभाई थी। अंतिम अरदास के समय श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब भी अपने श्रद्धालुओं समेत श्री अकाल तख्त साहिब पर विराजमान थे।[५]

गुरमति-सेवा : गुरमति संबंधी भाई साहिब की तीन प्रकार की रचनाएं मिलती हैं :—

(१) **वारें :** भाई साहिब कृत ४० वारें सिक्ख धर्म के नियमों का उत्तम भंडार हैं। यह कहना अत्युक्ति नहीं कि सिक्खी का 'रहितनामा' भाई साहिब की बाणी से बढ़कर और कोई नहीं। श्री गुरु अरजन देव जी के वचन हैं कि भाई गुरदास जी की रचना पढ़ने से सिक्खी प्राप्त होती है :

सुनि गुर अरजन जिह की बानी।
वर दीनो अस बिधि गति दानी।
पढ़े प्रेम करि के सिख जोऊ।
सिक्खी को प्रापत है सोऊ॥

(गुरु नानक प्रकाश)[६]

भाई गुरदास जी की ४० वारों में कुल ९१३ पउड़िआं हैं। डॉ. रतन सिंघ (जग्गी) का कथन है :—

''भाई गुरदास जी का भाषा संबंधी ज्ञान बड़ा विशाल और अधिकारपूर्ण था। सचमुच वे भाषा के अधिनायक थे। जिस ज्ञान-परंपरा से संबंधित शब्दों के प्रयोग की आवश्यकता उन्हें हुई वही शब्द अपनी सांस्कृतिक विरासत और संकल्प सहित उपस्थित हो गया। भाई गुरदास जी जैसे कुशल घड़ने वाले की खराद पर चढ़ने के पश्चात् उसे (शब्द को) जो रूप प्रदान किया गया, उसने उसे प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार किया। वह आज भी आनंदपूर्वक अपने स्थान पर सजा हुआ है। उसका प्रकरण के अन्य शब्दों के साथ इतना घनिष्ठ सुमेल है कि क्या मजाल है आज भी उसे हटाकर कोई अन्य शब्द रखा जा सके। इसके समुचित प्रयोग के फलस्वरूप सारा प्रकरण ही कांतियुक्त हो जाता है। निस्संदेह यह पंजाबी भाषा के लिए गौरव की बात है। . . . इनमें सामाजिक, धार्मिक तथा ऐतिहासिक पक्ष के साथ-साथ सिक्खों के सदाचार का वर्णन भी यत्र-तत्र हुआ है।[७]

(२) **कबित्त, सवैये आदि :** इनकी कुल गिनती ६७५ है। इनमें से ६४८ कबित्त, ३ सवैये, ८ दोहरे (दोहे), ८ सोरठे और ८ छंत हैं।[८]

(३) **संस्कृत सलोक :** कवि भाई संतोख सिंघ ने अपने विशाल ग्रंथ 'गुर प्रताप सूरज' में भाई गुरदास जी के छः संस्कृत सलोकों का उल्लेख किया है। जनश्रुति है कि जब पंडितों ने 'वाहिगुरु' शब्द से पहले प्रचलित परमात्मा के नामों से अधिक उसकी विशेषता के बारे में प्रश्न किया तो भाई गुरदास जी ने संस्कृत सलोकों के माध्यम से अपने विचार प्रकट किए थे। ये सलोक 'गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' की ७वीं रास, अंसू ४, छंद ५१ वाले विवरण में सुरक्षित हैं।[९]

(४) **श्री गुरु ग्रंथ साहिब का लेखन-कार्य :** समस्त बाणी का भंडार पांचवें गुरु श्री गुरु अरजन देव जी को अपने पूर्वजों की विरासत के रूप में प्राप्त हुआ था। उन्होंने इसके मूल रूप को सुरक्षित रखने के लिए समग्र बाणी को एक ही ग्रंथ में संकलित करने का निश्चय किया। गुरु साहिब को

अपने मामा भाई गुरदास जी ही एकमात्र भरोसेयोग्य व्यक्ति नज़र आए जो कि अनेक भाषाओं के पारंगत भी थे। श्री गुरु अरजन देव जी ने उन्हें ही गुरबाणी के लेखन-कार्य के लिए अपने साथ जोड़ा। यह कार्य कैसे संपन्न हुआ, इसके बारे में भाई कान्ह सिंघ के 'महान कोश' तथा अन्य स्रोतों के आधार पर डॉ. दलीप सिंघ 'दीप' ने लिखा है :—

''श्री गुरु अरजन देव जी ने गुरबाणी को संभालने तथा एक ही स्थान पर संकलित कर मिलावट से बचाने के लिए उसे एक 'ग्रंथ' में सुरक्षित रखने का निश्चय किया। यह एक महान् कार्य था, जिसके लिए भाई (गुरदास) साहिब ने अत्यंत परिश्रम किया। वे उस समय के सर्वाधिक विद्वान और विश्वसनीय सिक्ख थे। गुरु साहिब ने उन्हें योग्य समझकर पहले बाणी संकलित करने और फिर क्रमानुसार लिखने के लिए कहा।''

''रामसर (श्री अमृतसर) में इस महान और अमर ग्रंथ के लिए शामियानों तथा कनातों की व्यवस्था की गई। कलमों और रोशनाई के लिए भाई बंनो नामक महानुभाव को उत्तरदायित्व सौंपा गया। गुरु साहिब के निर्देशानुसार 'ग्रंथ' की लिखाई का कार्य आरंभ हुआ।''

''गुरु (अरजन देव) साहिब उपलब्ध बाणी को संपादित करके देते जाते थे और भाई गुरदास जी उसको लिखते रहते थे।... सन् १६०४ ई. में लेखन-कार्य संपन्न किया।''[१०]

भाई कान्ह सिंघ नाभा के अनुसार इसी वर्ष (संवत् १६६१ अर्थात् सन् १६०४) की भादों सुदी १ (प्रतिपदा) को (इस पावन ग्रंथ को) श्री हरिमंदर साहिब में गुरमति के प्रचार के लिए स्थापित कर बाबा बुड्ढा जी को ग्रंथी नियुक्त किया गया।... श्री गुरु अरजन साहिब ने जो प्रति भाई गुरदास जी की कलम से लिखवाई थी, उसका प्रसिद्ध नाम 'भाई गुरदास वाली प्रति' हो गया।[११] अन्यथा इसे 'पोथी साहिब' पुकारा जाता था।[१२]

भाई गुरदास जी की स्वरचित कृतियों की महिमा : इस संदर्भ में ज्ञानी लाल सिंघ का कथन है— ''भाई गुरदास जी श्री गुरु अमरदास जी के भतीजे थे, जो कि भल्ला गोत्र के खत्रियों से संबंध रखते थे।[१३] ये संस्कृत के अच्छे ज्ञाता और पंजाबी के शिरोमणि विद्वान थे। . . . इसमें कोई संदेह नहीं है कि श्रीमान भाई गुरदास जी ने सिक्ख धर्म की जो सेवा की, वह अद्वितीय है। उस युग के सभी हालात उनकी वारों से ही मिलते हैं।''[१४]

(क) **जीवनीकार :** ज्ञानी लाल सिंघ का कथन शत-प्रतिशत सही है। पहले छः सिक्ख गुरु साहिबान के जीवन-कार्यों संबंधी अनेक प्रसंग भाई साहिब की वारों में मिलते हैं। भाई गुरदास जी की पहली वार को भाई मनी सिंघ जी से सुनकर ज्ञानी सूरत सिंघ ने 'गिआन रतनावली' शीर्षक से उसका विस्तृत विवेचन करते हुए श्री गुरु नानक देव जी के जीवन-प्रसंगों और दार्शनिक सिद्धांतों पर प्रकाश डाला था। एक विद्वान् ने इस टीका के आधार पर भाई गुरदास जी को बहुपक्षीय ज्ञान-युक्त, गंभीर चिंतक, श्रद्धावान् सिक्ख, गुरमति के सिद्धांतों के गंभीरतापूर्वक विश्लेषक, इतिहासकार, ब्रह्मज्ञानी तथा महान लेखक की उपमाएं प्रदान की हैं।[१५]

(ख) **गुरबाणी के व्याख्याकार :** भाई गुरदास जी की वारों में कई ऐसे प्रसंग मिलते हैं, जिनसे यह प्रकट होता है कि उन्होंने श्री गुरु ग्रंथ साहिब में विद्यमान अन्य महानुभावों के कथनों का स्पष्टीकरण बड़ी सरल भाषा में किया है, यथा :

(१) **भाई सत्ता जी—** भाई बलवंड जी की वारों में से एक उदाहरण प्रस्तुत है :

लहणे दी फेराईऐ नानका दोही खटीऐ ॥. . .
सचु जि गुरि फुरमाइआ किउ एदू बोलहु हटीऐ ॥
पुत्री कउलु न पालिओ करि पीरहु कन्ह मुरटीऐ ॥
होरिंओ गंग वहाईऐ दुनिआई
आखै कि किओनु ॥ *(पन्ना ९६६)*

भाई गुरदास जी ने अपनी पहली वार में इस पद का विश्लेषण इस प्रकार किया है :

फिरि बाबा आइआ करतारपुरि
भेखु उदासी सगल उतारा ।
पहिरि संसारी कपड़े मंजी बैठि कीआ अवतारा ।
उलटी गंग वहाईओनि
गुर अंगदु सिरि उपरि धारा ।
पुतरी कउलु न पालिआ
मनि खोटे आकी नसिआरा । *(वार १:३८)*

श्री गुरु नानक देव जी ने अपने पुत्रों को गुरुआई प्रदान न की (पुत्री... मुरटीए) और 'लहिणा' (श्री गुरु अंगद देव जी) को यह धार्मिक विरासत सौंपी। इसके बारे में भाई सत्ता जी-भाई बलवंड जी नामक रबाबियों के कथन का विश्लेषण भाई गुरदास जी के मनोहर वचनों द्वारा सरल भाषा में किया गया है।[१६]

(२) **भाई सत्ता जी—** भाई बलवंड जी का कथन है कि श्री गुरु नानक देव जी ने कठिन परीक्षा (जां सुधोसु) के पश्चात् भाई लहिणा जी को 'अंगद' नाम प्रदान कर गुरुआई प्रदान की थी। इन रबाबियों के श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित एक पद का तत्संबंधी चरण इस प्रकार है :

जां सुधोसु तां लहणा टिकिओनु ॥ (पन्ना ९६७)

भाई गुरदास जी ने श्री गुरु नानक देव जी के इस महान कार्य को राजाओं के सिक्का चलाने के प्रतीक के रूप में नई परंपरा एवं दीपक की ज्योति से दूसरा दीपक जलाने के बिंब-विधान द्वारा परिपुष्ट किया यथा :

मारिआ सिका जगति विचि
नानक निरमल पंथु चलाइआ ।
थापिआ लहिणा जीवदे
गुरिआई सिरि छत्रु फिराइआ ।
जोती जोति मिलाइ कै
सतिगुर नानकि रूपु वटाइआ ।
लखि न कोई सकई
आचरजे आचरजु दिखाइआ ।
काइआ पलटि सरूपु बणाइआ ॥ (वार १:४५)[१७]

(३) भक्त नामदेव जी ने अपने परम मित्र भक्त त्रिलोचन जी को परमार्थ का सही रास्ता इस प्रकार बताया है :

नामा कहै तिलोचना मुख ते रामु सम्हालि ॥
हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरंजन नालि ॥
(पन्ना १३७५)

भावार्थ : भक्त नामदेव जी ने अपने मित्र भक्त त्रिलोचन जी से कहा कि वह हाथ-पैर से परिश्रम

करे और मुख से निरंतर प्रभु-नाम की माला (संम्हा) जपता रहे। इस प्रकार सदैव अपने हृदय में निराकार ईश्वर (निरंजन) का ध्यान करता रहे।

भाई गुरदास जी ने इस पद का विश्लेषण इस प्रकार किया है :

किरति विरति करि धरम दी
हथहु दे कै भला मनावै। *(वार ६:१२)*

भावार्थ : मनुष्य को चाहिए कि वह ईमानदारी से अपने पेशे (वृत्ति) संबंधी कार्य करे और दानशील बनकर सभी सांसारिक जीवों का भला करे।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भाई गुरदास जी की वारें पहले छः सिक्ख गुरु साहिबान--- श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब तक की जीवन-गाथा और गुरमति सिद्धांतों का अत्यंत प्रमाणिक कोश हैं।

संदर्भ-सूची :

१ (क) डॉ. नवरत्न कपूर, महिमा श्री गुरू अंगद देव जी, पृष्ठ ५८ (प्रो. साहिब सिंघ, गुरमति ट्रस्ट, पटियाला द्वारा प्रकाशित पंजाबी पुस्तक), सन् २००४.

(ख) डॉ. नवरत्न कपूर, श्री गुरु अंगद देव जी : यशोगान परंपरा और बाणी, पृष्ठ ३८ (छठा अध्याय : भाई गुरदास जी), संगम प्रेस, पुणे (महाराष्ट्र), सन् २००६.

२. स. सतिंदर सिंघ नंदा (संपादित), प्रो. किरपाल सिंघ कसेल अभिनंदन ग्रंथ, पृष्ठ ५३२ (हिरदेजीत साहित प्रकाशन, पटियाला), सन् २००३

३. डॉ. जीत सिंघ सीतल, अंम्रितसर : सिफती दा घर, पृष्ठ ९९ (पंजाब यूनिवर्सिटी, पटियाला).

४. भाई कान्ह सिंघ नाभा (संपादित), महान कोश, पृष्ठ ३२७ (भाषा विभाग, पंजाब सरकार, पटियाला)

५. (क) ज्ञानी लाल सिंघ, गुरमति निरणै भंडार, पृष्ठ ८६० (जनक प्रकाशन, संगरूर)

(ख) डॉ. दलीप सिंघ 'दीप', भाई गुरदास, पृष्ठ २२ (भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला)

६. भाई कान्ह सिंघ नाभा (संपा), महान कोश, पृष्ठ ३११ तथा अंतिका (परिशिष्ट), पृष्ठ ८६१ (उपर्युक्त)

७ डॉ. रतन सिंघ (जग्गी), वारां भाई गुरदास जी : शबद अनुक्रमणिका अते कोश, निवेदन, पृष्ठ ग-घ (पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला), सन् १९६६

८. सन् १९४० ई. तक कबित्त सवैयों की गिनती ५५६ ही ज्ञात थी, जो कि भाई कान्ह सिंघ नाभा ने महान कोश के पृष्ठ ३११ पर दी थी। बाद में भाई वीर सिंघ ने ११९ और ढूंढ लिए। इस प्रकार इनकी संख्या अब ६७५ ही मानी जाती है। गुरमेल सिंघ (संपादक), गुरू नानक देव जी दीआं जनमसाखीआं विचले इतिहासिक अते मिथिहासिक संकेतां दा कोश, पृष्ठ १०५ (प्रो. साहिब सिंघ, गुरमति ट्रस्ट, पटियाला), सन् २००४

९. उपर्युक्त, पृष्ठ १०५..

१० डॉ. दलीप सिंघ 'दीप', भाई गुरदास, पृष्ठ ९ (भाषा विभाग, पंजाब सरकार, पटियाला)

११. भाई कान्ह सिंघ नाभा (संपादित), महान कोश, पृष्ठ ३२७

१२. (क) डॉ. दलीप सिंघ 'दीप', भाई गुरदास, पृष्ठ ९.

(ख) पुरातन जनमसाखी, पृष्ठ ११४ के अनुसार श्री गुरु नानक देव जी और उनकी उदासियों (भ्रमण) के दौरान एकत्रित बाणी की भाई मनसुख द्वारा की गई क्रमबद्ध प्रति को 'पोथी' कहा जाने लगा, जिसे श्री गुरु अंगद देव जी को सौंपा गया था।

१३. ज्ञानी लाल सिंघ, गुरमति मारतंड, पृष्ठ ८६१ (जनक प्रकाशन, संगरूर)

१४. उपर्युक्त, पृष्ठ ८८

१५. डॉ. गुरमेल सिंघ (संपादक), गुरू नानक देव जी दीआं जनमसाखीआं विचले इतिहासिक अते मिथिहासिक संकेतां दा कोश, पृष्ठ १०५.

१६ डॉ. नवरत्न कपूर, महिमा श्री गुरु अंगद देव जी, पृष्ठ ६१ (प्रो साहिब सिंघ गुरमति ट्रस्ट, पटियाला द्वारा प्रकाशित पंजाबी पुस्तक), सन् २००४.

१७ डॉ नवरत्न कपूर, खालसा पंथ : विकास-यात्रा और मानव-हितैषी आदर्श, पृष्ठ १९

धर्म की अवधारणा और गुरमत

-डॉ. तरसेम सिंघ लड्डा*

धर्म क्या है, इस बारे में विद्वानों के विभिन्न मत हैं। धर्म की उत्पत्ति कैसे हुई, यह भी विद्वानों की शोध का विषय रहा है। हर कोई इस बात से सहमत है कि धर्म की शुरूआत मानव सभ्यता की उत्पत्ति के समय हुई थी। मानव जाति की भलाई के लिए समय-समय पर ऋषि, पैगंबर और गुरु धरती पर पैदा हुए। जब धार्मिक सद्भाव की बात आती है, तो हर धर्म का मुख्य उद्देश्य मानव-कल्याण और नैतिक शिक्षा प्रदान करना है। दुनिया में आठ प्रमुख धर्म हैं। ये दो परंपराओं में विभाजित हैं— भारतीय धर्म और सामी धर्म। भारतीय धर्मों में वैदिक धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म और सिक्ख धर्म हैं। इसी तरह सेमेटिक धर्मों में पारसी, यहूदी, ईसाई और इसलाम शामिल हैं। इस लेख में हम गुरमत के दृष्टिकोण से धर्म के महत्व को देखने का प्रयास करेंगे।

गुरमत से हमारा तात्पर्य यहां सिक्ख धर्म से है। यदि हम धर्म की परिभाषा के बारे में बात करते हैं, तो अब तक विद्वानों ने धर्म की अलग-अलग परिभाषाएं दी हैं। प्रसिद्ध मानवविज्ञानी ई.बी. टायलर के अनुसार, आध्यात्मिक शक्तियों में विश्वास को धर्म कहा जाता है। जेम्स फ्रेजर का मानना है कि जादू धर्म का आधार है। मैक्स वेबर धर्म को सामाजिक इकाइयों के साथ जोड़ते हैं। सिगमंड फ्रायड का मानना है कि धर्म मनुष्य की मानसिक स्थिति से संबंधित है। जब हम गुरबाणी को देखते हैं तो हमें धर्म की एक सुंदर परिभाषा मिलती है। श्री गुरु अरजन साहिब अपनी बाणी सुखमनी साहिब में फरमान करते हैं कि सबसे अच्छा धर्म है— भगवान के नाम का जाप करना और अच्छे कर्म करना :

सरब धरम महि स्रेसट धरमु ॥
हरि को नामु जपि निरमल करमु ॥ (पन्ना २६६)

समाज के गठन के लिए धर्म मनुष्य को मार्गदर्शन प्रदान करता है। गुरबाणी इंसान को इस दुनिया में ईश्वर के अस्तित्व का एहसास करने के लिए प्रेरित करती है। यदि कोई मनुष्य सभी में ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास करता है, तो वह किसी अन्य मनुष्य को नुकसान पहुंचाने के बारे में कभी नहीं सोच सकता। भक्त शेख फरीद जी कहते हैं कि सभी जीवों का मन मोती की तरह है। यदि हम प्रभु से प्यार करते हैं, तो किसी का दिल न दुखाएं :

सभना मन माणिक ठाहणु मूलि मचांगवा ॥
जे तउ पिरीआ दी सिक
हिआउ न ठाहे कही दा ॥१३० ॥ (पन्ना १३८४)

धार्मिक रीति-रिवाज धर्म का प्रमुख हिस्सा हैं। ये हर धर्म में प्रचलित हैं। यदि ये संस्कार

*सहायक प्रोफेसर, अकाल विश्वविद्यालय, तलवंडी साबो, जिला बठिंडा, फोन : ९८०७५-०२०२०

मात्र दिखावा बन जाते हैं, तो इनका वास्तविक महत्व खो जाता है। भक्त कबीर जी, भक्त रविदास जी और श्री गुरु नानक देव जी ने धार्मिक पाखंड का स्पष्ट खंडन किया है। इस संदर्भ में बाणी 'आसा की वार' को पढ़ा जा सकता है।

धर्म मानवता की भलाई के लिए है, लेकिन इतिहास में कई बार हमें ऐसी कई घटनाएं देखने को मिलती हैं जो बताती हैं कि धार्मिक विवादों के कारण लोगों के बीच दंगे हुए। जब हम धर्म की वास्तविक समझ से परे होते हैं और खुद को दूसरों से बेहतर समझते हैं तथा दूसरे धर्मों को घृणा की दृष्टि से देखने लगते हैं, फिर आपसी टकराव होता है। यदि हम इसे गुरमत के दृष्टिकोण से देखें, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि यदि हम दूसरों के दोषों को देखते हैं, तो दूसरों के दोष आसानी से हमारे भीतर प्रवेश कर जाएंगे। यदि हम दूसरों के गुणों को देखते हैं तो हमारे गुणों में वृद्धि होती है। इस बात को स्पष्ट करने के लिए हम श्री गुरु नानक देव जी की पश्चिम की यात्रा का उदाहरण ले सकते हैं। जब श्री गुरु नानक देव जी मक्का गए, तो उनसे कई प्रश्न किए गए। पूछे गए प्रश्नों में से एक था— गुरु जी बताएं कि हिंदुओं और मुसलमानों में कौन बेहतर है? गुरु जी ने उत्तर दिया कि जो अच्छे कर्म करता है वह बेहतर होता है। यदि ये दोनों अपनी धार्मिक प्रथाओं को भूल जाते हैं और केवल बाहरी पाखंड पर निर्भर रहते हैं, तो दोनों को नुकसान होगा। भाई गुरदास जी ने इसे अपनी वारों में दर्ज किया है। श्री गुरु नानक देव जी की बाणी 'सिध गोसटि' इस बात का ठोस प्रमाण है कि कैसे श्री गुरु नानक देव जी अपने विचारों को अन्य मतावलंबियों के पास व्यक्त करते थे। यह अंतर-संवाद का एक आदर्श उदाहरण है। प्राचीन काल से ही धर्म अपनी दिशा में आगे बढ़ रहा है। हालांकि, आधुनिक समय में तर्कसंगतता के आगमन के साथ धर्म में कई नई दिशाएं सामने आई हैं, लेकिन धर्म का आधार तर्क नहीं है। धर्म का आधार व्यक्ति की श्रद्धा है। गुरमत में तर्क और श्रद्धा, विवेक में संयुक्त हैं। यही कारण है कि गुरु साहिब हमें विवेक (बिबेक) दान की इच्छा करने के लिए प्रेरित करते हैं। यहां तक कि दैनिक अरदास में सिक्ख अकाल पुरख से विवेक दान माँगते हैं।

सिक्खां नूं सिक्खी दान. . .
बिबेक दान . . .।

धर्म मूल रूप से मन के साथ जुड़ा है। यही कारण है कि मानसिक परिवर्तन को धर्म में अधिक मान्यता दी गई है। जीवन में इंसान को कई समस्याएं होती हैं और कभी-कभी वह टूट जाता है। दुख उसे घेर लेता है। ऐसे समय में यदि कोई धर्म का सहारा लेता है तो मानसिक शक्ति प्राप्त होती है। धर्म आशा देता है। धर्म आशावादी है। दुनिया में मानसिक समस्याएं बढ़ रही हैं। लोग आत्म-हत्या भी करते हैं, लेकिन ईश्वर में विश्वास रखने वाला व्यक्ति आत्म-हत्या नहीं करेगा।

इस लेख में हमने यह समझने की कोशिश की है कि धर्म मनुष्य का मूल आधार है। आस्था और प्रेम इसमें प्रमुख उपकरण हैं। इनके बिना धर्म का अस्तित्व नहीं है।

मानवीय इतिहास में शांतमयी आंदोलन की सुनहरी गाथा : मोर्चा गुरुद्वारा गुरु का बाग़

*-स. हरशरन सिंघ**

मोर्चा गुरुद्वारा गुरु का बाग़ शांतमयी और निहत्थे आंदोलनकारियों पर अंग्रेज़ सरकार द्वारा किये गए जुल्म और अत्याचार की गाथा है। मानवीय इतिहास में यह एक बेमिसाल घटना है, जिसमें शांतमयी आंदोलनकारियों ने अंग्रेज़ सरकार के जुल्म-ओ-सितम के आगे अपने हाथ की कनिष्ठिका (सबसे छोटी उंगली) भी न उठाने की कसम खायी हुई थी। इस ऐतिहासिक घटना की महत्ता और भी बढ़ जाती है, जब हम यह देखते हैं कि शांतमयी रह कर सरकारी जुल्म सहने वाला वही शेरदिल, जांबाज खालसा है, जिसने तेग़ पकड़ कर सदियों तक मुग़ल बादशाहों के जुल्म के विरुद्ध लड़ाई में हैरानीजनक-ऐतिहासिक कारनामे कर दिखाए थे। यह वही खालसा है, जिसने एक सदी तक अफगान लुटेरों के विरुद्ध लंबी लड़ाई लड़ते हुए, आख़िरकार इन लुटेरों को दर्रा-ख़ैबर से पार भागने के लिए मजबूर कर दिया था और जो फिर कभी भी लौट कर वापिस आने की हिम्मत नहीं कर सके। इस तरह खालसा ने अपने देश की उत्तरी-पश्चिमी सरहद को सदा के लिए विदेशी लुटेरों से सुरक्षित बना दिया था। इन चमत्कारी कारनामों के कारण ही ख़ालसे की धूम सारे संसार में मच गई।

भारत में अंग्रेज़ साम्राज्य के विरुद्ध यह पहला शांतमयी आंदोलन था, जिसमें साढ़े पांच हज़ार से भी अधिक सिंघों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया था। सिंघों के इस शांतमयी आंदोलन पर पुलिस द्वारा अंधा अत्याचार किया गया था। आंदोलनकारियों ने शांत-चित्त रहकर यह सारा जुल्म-ओ-सितम अपने तन पर झेला था। इस दौरान किसी भी सिंघ ने 'उफ' तक न की।

शेर-ए-पंजाब महाराजा रणजीत सिंघ के अकाल प्रस्थान करने के पश्चात अंग्रेज़ों की कुटिल चालों के कारण आख़िरकार १८८४ ई. में हिंदोस्तान की धरती पर एकमात्र स्वतंत्र हस्ती खालसा राज्य को ग़ुलाम बना कर अंग्रेज़ राज्य में शामिल कर लिया था। अंग्रेज़ों ने धीरे-धीरे गुरुद्वारा साहिबान पर काबिज़ महंत वर्ग को भी काबू कर लिया। महंतों ने भी अंग्रेज़ सरकार की सरप्रस्ती स्वीकार कर ली थी। महंत वर्ग सिक्ख श्रद्धालुओं की भावनाओं की अनदेखी करने लग गए थे। महंत वर्ग गुरुद्वारा साहिब को अपना पक्का आमदन-स्रोत मान कर अनैतिक गतिविधियों में मस्त हो चुका था। १९वीं सदी के अंतिम वर्षों में 'सिंघ सभा लहर' और २०वीं सदी के आरंभ में

**४३, चरन बाग, पटिआला-१४७००१, फोन : ९४१७७-०८३४३*

'चीफ़ खालसा दीवान लहर' के कारण, सिक्ख समाज में विद्या के प्रचार और प्रसार के कारण जागृति की लहर चली थी। जागरूक हुए सिक्ख श्रद्धालुओं को महंत वर्ग की अनैतिक गतिविधियां कांटे की तरह चुभने लगी थीं। परिणामस्वरूप सुधारवादी लहर के नेताओं द्वारा गुरुद्वारा साहिब के प्रबंध में सुधार करने का नुक्ता सबसे पहले स्थान पर आ गया। क्योंकि अंग्रेज़ सरकार अपनी पूरी शक्ति के साथ महंत वर्ग की पीठ थपथपा रही थी, इसलिए सुधारवादी लहर को अपनी मंजिल तक पहुंचने के लिए लंबे और कष्टदायक संघर्ष में से गुज़रना पड़ा। सिक्ख कौम इस सारे कष्टदायक रास्ते पर चल कर, शांतमयी आंदोलन कर आख़िरकार विजेता होकर अपनी मंजिल तक जा पहुंची थी। यह सारा कुछ सिक्ख इतिहास का एक शानदार और सुनहरी अध्याय बन गया है। इस सुनहरी इतिहास में 'मोर्चा गुरुद्वारा गुरु का बाग़' को बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

गुरुद्वारा गुरु का बाग़ नामक ऐतिहासिक स्थान श्री अमृतसर की उत्तरी दिशा में श्री अमृतसर से लगभग २३ किलोमीटर की दूरी पर गांव घुक्केवाली में स्थित है। उस समय कसबा राजासांसी तक पक्की सड़क थी। इसके आगे गुरुद्वारा गुरु का बाग़ तक का सारा रास्ता कच्चा था। सिक्ख इतिहास के अनुसार इस स्थान पर पहले श्री गुरु अरजन देव जी और फिर श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब पधारे थे। वे कई दिन तक यहीं पर रह कर आस-पास के गाँवों में धर्म-प्रचार करते रहे। श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब ने इस स्थान पर एक बाग़ लगवाया था, इस कारण यह स्थान गुरुद्वारा गुरु का बाग़ नाम से प्रसिद्ध हो गया। श्री गुरु अरजन देव जी और श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब की याद में यहां दो गुरुद्वारा साहिबान मौजूद हैं। खालसा राज्य के समय इन गुरुद्वारा साहिबान की कार-सेवा का काम महाराजा रणजीत सिंघ ने करवाया था।

बीसवीं सदी के दूसरे दशक में गुरुद्वारा गुरु का बाग़ पर महंत सुंदर दास का कब्ज़ा था। महंत गुरुद्वारा साहिब की आमदन के सहारे ऐश-प्रस्ती और अनैतिक जीवन व्यतीत कर रहा था। वह शराब का सेवन सरेआम करता था। उसने दो स्त्रियां बतौर रखैल रखी हुई थीं। इलाके की सिक्ख संगत महंत की ऐसी अनैतिक गतिविधियों से बहुत दुखी थी। सिक्ख संगत किसी ऐसे अवसर की तलाश में थी, जब गुरुद्वारा साहिब में से महंत को बेदख़ल कर गुरुद्वारा साहिब की सेवा-संभाल का काम गुरमत रीति अनुसार किया जा सके।

२६ जनवरी, १९२१ ई. को गुरुद्वारा श्री दरबार साहिब, तरनतारन पर सिक्ख संगत ने कब्ज़ा कर लिया था। वहां के महंत को बेदख़ल कर दिया गया था। इस घटना से उत्साहित होकर इलाके की सिक्ख संगत का जलसा ३१ जनवरी, १९२१ ई. को एक जत्थे के रूप में स. करतार सिंघ झब्बर के नेतृत्व में गुरुद्वारा गुरु का बाग़ में पहुंच

गया। आस-पास के गांवों की संगत बड़ी तादाद में पहले ही वहां पहुंच चुकी थी। गुरुद्वारा गुरु का बाग़ में पहुंची संगत की संख्या ५०० से भी अधिक हो गई। संगत ने सरोवर में स्नान किया और फिर सरोवर के किनारे ही दीवान सजा दिया। शबद-गायन किया गया, फिर अरदास की गई। उपरांत सिक्ख संगत गुरुद्वारा साहिब में दाख़िल हो गई। गुरुद्वारा साहिब में मौजूद महंत के आदमियों को बाहर निकाल दिया गया। फिर स. दान सिंघ विछोआ की प्रेरणा से महंत सुंदर दास गुरुद्वारा साहिब का प्रबंध एक लोकल कमेटी के हवाले करने के बाद ख़ुद कमेटी अधीन सेवा करने के लिए राज़ी हो गया। समझौते की शर्तों के अनुसार महंत सुंदर दास अमृत छक कर सिंघ सज गया। महंत ने अपनी एक रखैल के साथ गुरमत मर्यादा के अनुसार विवाह करवा लिया। अब महंत को हर महीने नियत तनख़्वाह मिलने लगी।

पंजाब में अंग्रेज़ सरकार की एक नीति के अनुसार वह गुरुद्वारा साहिब पर काबिज़ महंत वर्ग को किसी भी हालत में बेदख़ल होता नहीं देखना चाहती थी, क्योंकि महंत वर्ग अंग्रेज़ सरकार का पिट्ठू बना हुआ था। इस संदर्भ में सिक्खों से संबंधित कुछ घटनाओं का ज़िक्र करना ज़रूरी बनता है।

१९वीं सदी के अंतिम वर्षों में एक बार इंग्लैंड की संसद में भारत से संबंधित कुछ प्रश्नों का उत्तर देते हुए सरकार की तरफ से संसद को बताया गया कि इस समय हिंदोस्तान में उनकी हुकूमत पक्के पांव जमा चुकी है। ब्रिटिश हुकूमत को यदि किसी से कोई ख़तरा हो सकता है तो वह सिक्ख कौम से हो सकता है, क्योंकि सिक्खों के गुरुद्वारे मुल्क में स्वतंत्र शासन के रूप में संचालित हैं। सरकार की नीति यह है कि गुरुद्वारा साहिब पर काबिज़ महंत वर्ग को हर हाल अपने कब्ज़े में रखा जाये। सन् १९१४ ई. में बंगाल के बजबज घाट नामक स्थान पर कामागाटामारू जहाज़ के सिक्ख यात्रियों का बिना किसी वजह के अंग्रेज़ सरकार ने कत्ल-ए-आम कर दिया था। इस घटना के कारण सिक्ख जगत में सरकार के विरुद्ध बहुत ज़्यादा आक्रोश पैदा हो गया था।

इसी तरह १९१९ ई. की वैसाखी वाले दिन जलियां वाला बाग़ में इकठ्ठा हुए शांतमयी लोगों का कत्ल-ए-आम करने वाले अंग्रेज़ जनरल डायर को श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार अरूड़ सिंघ द्वारा सिरोपाओ देकर सम्मानित किया गया था। इसी संदर्भ में उस समय के पंजाब के अंग्रेज़ गवर्नर ने हिंदोस्तान के वायसराय लार्ड रिपन को एक पत्र इस प्रकार लिखा था— ''मेरे ख़्याल से यह बात राजनीतिक रूप से सरकार के लिए बहुत घातक सिद्ध होगी कि सिक्ख धर्म-स्थानों का नियंत्रण मौजूदा महंत वर्ग के हाथों से निकल कर किसी ऐसी कमेटी के हाथों में चला जाये, जो हमारी सरकार के कंट्रोल से आज़ाद हो।''

उपरोक्त दर्शायी गई सारी स्थिति के मद्देनज़र

सिक्ख संगत द्वारा गुरुद्वारा साहिब को महंतों से मुक्त कराने की लहर को सरकार द्वारा सख़्ती से कुचलने की नीति तैयार की गई। अंग्रेज़ सरकार किसी भी हालत में अपने पिट्ठू महंत वर्ग को गुरुद्वारा साहिब से बेदख़ल होते नहीं देखना चाहती थी। इसी नीति के अधीन सरकार गुरुद्वारा गुरु का बाग़ के महंत के समर्थन में आ खड़ी हुई। गुरुद्वारा साहिब के लंगर के लिए जब पांच सिंघ बबूल की लकड़ी काटने के लिए गए तो पुलिस ने इन सिंघों को लकड़ी चोरी करने के दोष में गिरफ़्तार कर लिया। इसी तरह अगले दिन भी पांच सिंघों को गिरफ़्तार कर लिया गया। सरकार की शह पर महंत सुंदर दास ने १० अगस्त, १९२२ ई. को पुलिस थाने में रिपोर्ट दर्ज करवाई कि पकड़े गए सिंघों ने उसकी ज़मीन में से लकड़ी चोरी की है। अदालत की तरफ से इन सभी सिंघों को चोरी के इलज़ाम में सज़ा सुना कर जेल भेज दिया गया। अब हर रोज़ पांच-पांच सिंघों का जत्था गुरुद्वारा साहिब की ज़मीन में से लंगर के लिए लकड़ी काटने के लिए जाने लगा। सरकारी हिदायतों के अनुसार पुलिस इन सिंघों को पकड़ कर अदालती कार्यवाही करने के बाद जेल भेज देती थी। इसी दौरान एक साजिश के अधीन महंत सुंदर दास ने कार्यालय के उस कमरे को आग लगा दी, जिसमें वो सारा रिकार्ड पड़ा था, जिसके अनुसार महंत सुंदर दास अब गुरुद्वारा साहिब की लोकल कमेटी के अधीन काम कर रहा था। महंत गुरुद्वारा साहिब पर पूरी तरह से काबिज़ हो गया। २३ अगस्त को पुलिस ने गुरुद्वारा साहिब में ड्यूटी कर रहे सभी सेवादारों को पकड़ कर उनको चोरी के इलज़ाम में जेल भेज दिया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हजूरी में बैठे सिंघ को भी लाठियां मार-मार कर ज़ख़्मी कर दिया। इस घटना के बाद सरकार को डर था कि कहीं शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी इस मसले में दख़लंदाजी न करे, इसलिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सारे सदस्य गिरफ़्तार कर लिए गए। सरकार द्वारा की गई ऐसी घिनौनी करतूत की ख़बर जंगल की आग की तरह सारे सिक्ख जगत में फैल गई। सिक्ख कौम इस बात को बिलकुल हज़म नहीं कर सकती थी कि महंत वर्ग सरकारी सरप्रस्ती में गुरुधामों पर काबिज़ रहे, इसलिए सिक्ख कौम अपने गुरुधामों को महंत वर्ग के चंगुल से आज़ाद कराने के लिए अपनी जान की बाज़ी तक लगाने के लिए तैयार बैठी थी।

सरकार द्वारा शुरू किये जुल्म-ओ-सितम के दौर में मोर्चा गुरुद्वारा गुरु का बाग़ की बागडोर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने अपने हाथों में ले ली। २९ अगस्त, १९२२ ई. से एक-एक जत्था श्री अकाल तख़्त साहिब से गुरुद्वारा गुरु का बाग़ के लिए भेजना शुरू कर दिया गया। एक सौ अकाली सिंघों का जत्था श्री अकाल तख़्त साहिब पर प्रण करके और अरदास करके चलता था कि वह सरकारी जुल्म और हर प्रकार की उकसाहट के बावजूद शांतमयी रह कर अपने गन्तव्य गुरुद्वारा गुरु का बाग़ तक पहुंचने की

कोशिश करेगा। आंदोलनकारी सिंघों ने सिर पर काली दसतार सजायी होती थी और दसतार पर सफ़ेद मोतिए के फूलों के हार डाले होते थे। श्री अकाल तख़्त साहिब पर सारे आंदोलनकारियों के गले में फूलों के हार डाले जाते थे। आंदोलनकारी सिंघों का जत्था पहले श्री दरबार साहिब माथा टेक कर फिर चार-चार की लाइनों में श्री अमृतसर साहिब की गलियों-बाज़ारों में से गुज़रता हुआ पैदल गुरुद्वारा गुरु का बाग़ के लिए चल पड़ता था। जत्थे के सदस्य ''जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ॥ सिरु धरि तली गली मेरी आउ॥'' तथा '' सूरा सो पहचानिऐ जु लरै दीन के हेत॥'' आदि शबद पढ़ते हुए जाते थे। श्री अमृतसर शहर में और रास्ते में सिक्ख संगत, हिंदू, मुसलमान आदि लोग जत्थे का स्वागत और उत्साहित करने हेतु उन पर फूलों की वर्षा करते थे। रास्ते में कई स्थानों पर लोग पानी की छबील, लंगर या अन्य खाने-पीने का सामान लेकर श्रद्धापूर्वक खड़े होते थे और जत्थे में शामिल सिंघों की सेवा कर उनका हौंसला बढ़ाने की कोशिश करते थे। आंदोलनकारी सिंघ चार-चार सदस्यों के जत्थे में गुरुद्वारा गुरु का बाग़ पहुंच जाते। गुरुद्वारा साहिब के बाहर पुलिस वाले जत्थे को रोक लेते थे और जत्थे को वापिस चले जाने के लिए कहते थे। जत्थे में शामिल अकाली सिंघ वापिस न मुड़ते और 'सतिनामु वाहिगुरू' का जाप करते हुए धीरे-धीरे आगे बढ़ने की कोशिश करते। फिर जत्थे की पहली लाईन में खड़े चार सिंघों में से एक सिंघ हाथ जोड़े 'सतिनामु वाहिगुरू' का जाप करता हुआ आगे बढ़ता। पुलिस वाले उसे लाठियों से पीटना शुरू कर देते। लाठियों की मार खा-खाकर जब आंदोलनकारी सिंघ नीचे गिर जाता तो जत्थे में से दूसरा सिंघ 'सतिनामु वाहिगुरू' का जाप करता हुआ आगे बढ़ने की कोशिश करता। पुलिस वाले उसे भी पीट-पीट कर धरती पर फेंक देते। इस तरह यह शांतमयी आंदोलन तब तक जारी रहता जब तक जत्थे में शामिल सारे सिंघ ज़ख़्मी होकर बेहोशी की हालत में गिर न पड़ते। आम तौर पर यह बात देखने में आई थी कि धरती पर गिरा कोई सिंघ यदि फिर उठ कर खड़ा हो जाता तो वह फिर 'सतिनामु वाहिगुरू' का जाप करता हुआ आगे बढ़ने की कोशिश करता। पुलिस वाले उसकी फिर से पिटाई करते।

जमीन पर गिरे और बेहोश हुए आंदोलनकारियों को पुलिस वाले उठा कर, पानी से भरे हुए साथ के खेतों में फेंक देते थे। ज़्यादा ज़ख्मियों को रेंड क्रास के वालंटियर उठा कर, लारी में डाल कर इलाज के लिए श्री अमृतसर साहिब ले जाते थे। गिरफ्तार सिंघों को पुलिस दूसरे दिन अदालत में पेश कर देती थी। अदालत द्वारा सज़ा सुनाए जाने के बाद सभी सिंघों को जेल भेज दिया जाता था।

कई बार यह भी देखने में आया था कि बेहोश सिंघों को पुलिस वाले ठोकरें मार-मार कर उनका बुरा हाल कर देते थे। मार खाकर नीचे गिरे

सिंघों के ऊपर से घुड़सवार पुलिस वाले दगड़-दगड़ कर गुज़र जाते थे। आंदोलनकारी सिंघ इतना ज़ुल्म सहन करके भी उफ तक नहीं कहते थे। सिंघ रूहानी मस्ती में रंगे हुए अकाल पुरख का शुक्रिया करते नज़र आते। उनको अपने गुरुधामों को महंतों और अंग्रेज़ सरकार के चंगुल से आज़ाद कराने का यह सुअवसर प्राप्त हुआ। वे इसे अपना अच्छा भाग्य समझते थे। आंदोलन के दौरान हर रोज़ सैकड़ों श्रद्धालु सिक्ख गुरुद्वारा गुरु का बाग़ में पहुंच जाते थे। बहुत-से श्रद्धालु सिक्ख आंदोलनकारियों के लिए लंगर और अन्य खाने-पीने का सामान लेकर आते थे। पुलिस वाले इन श्रद्धालु सिक्खों को आंदोलनकारियों के नज़दीक नहीं आने देते थे। कई बार पुलिस वाले यह लंगर ख़ुद ही खा जाते थे और बच गया लंगर नज़दीक के खेतों में फेंक देते थे। यह भी देखने में आया था कि पुलिस वाले सिक्ख दर्शकों को पकड़ कर नज़दीक के खेतों में ले जाते थे और वहां उनकी तलाशी लेकर जो रुपए-पैसे मिलते थे, वह छीन लेते थे। आम तौर पर सिक्ख दर्शक दूर खड़े ही आंदोलनकारी सिंघों पर पुलिस द्वारा ढाए जा रहे ज़ुल्म को देखते रहते थे और आंदोलनकारियों की चढ़दी कला के लिए अरदास करते थे। कई सिक्ख दर्शक ऊंची-ऊंची आवाज में शबद-गायन करते थे। कई बार सिक्ख दर्शक पुलिस के ज़ुल्मों को देख कर बहुत उत्तेजित हो जाते थे और ऊंचे स्वर में 'बोले सो निहाल, सति श्री अकाल' के जैकारे लगाने शुरू कर देते थे। ऐसे समय में पुलिस वाले अपने पालतू कुत्तों को दर्शकों को काटने के लिए भी छोड़ देते थे।

निहत्थे आंदोलनकारियों पर अंग्रेज़ सरकार के इस ज़ुल्म-ओ-सितम का दौर २२ सितंबर, १९२२ ई. तक जारी रहा। इसके बाद १७ नवंबर, १९२२ ई. तक आंदोलनकारियों को गिरफ़्तार कर अदालती कार्यवाही के बाद जेल भेज दिया जाता रहा। पंजाब की सभी जेलें आंदोलनकारी सिंघों से खचाखच भरी पड़ी थीं। सरकार द्वारा कई अस्थायी जेलें कायम कर वहां आंदोलनकारियों को कैद कर रखा जाता रहा। पुलिस के ज़ुल्मों के कारण हज़ारों सिंघ बुरी तरह से ज़ख़्मी हो गए। इन ज़ख्मियों का इलाज शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा बनाए गए अस्थायी अस्पतालों में किया जाता रहा। गंभीर ज़ख़्मी हुए सिंघों में से १० सिंघ शहादत प्राप्त कर गए थे।

मोर्चे की कुछ विशेष महत्वपूर्ण घटनाओं का विवरण :

मोर्चा गुरुद्वारा गुरु का बाग़ के बारे में खबरें हिंदोस्तान के बहुत-से अखबारों में आम तौर पर छपती रहती थीं। लाहौर से प्रकाशित होने वाले अंग्रेज़ी अख़बार 'ट्रिब्यून' ने तो मोर्चे से संबंधित समाचार प्रकाशित करने के लिए एक कालम 'मोर्चा गुरु का बाग़' नाम से आरक्षित रखा हुआ था। इस कालम में हर रोज़ मोर्चे से संबंधित घटने वाली घटनाओं का विस्तारपूर्वक ज़िक्र किया जाता था।

प्रो. रुचि राम साहनी, जो कई बार गुरुद्वारा गुरु का बाग़ में जाकर सारी घटनाओं को अपनी आंखों से देख चुका थे, की तरफ से ७ सितंबर, १९२२ ई. के 'ट्रिब्यून' में भेजी रिपोर्ट निम्नलिखित अनुसार थी :—

''कोई भी मानव इन घटनाओं को देख कर यह महसूस किये बिना नहीं रह सकता कि अकाली सिंघों के जत्थों में मुख्य रूप से शामिल सूक्ष्म आदर्शवाद को अपनाए हुए साधारण ग्रामीण हमारी आँखों के सामने अपने दृढ़ हौसले, हैरानीजनक सहनशीलता, पुलिस द्वारा अति नीच दर्जे की उकसाहट के बावजूद, अपने आपको नियंत्रण में रखते हुए और हंसते-हंसते ज़ुल्म सहने की शक्ति द्वारा यह सिद्ध कर रहे हैं कि वे बीसवीं सदी के सबसे बड़े महानायक हैं।''

महाशय कृष्ण, एडीटर 'रोज़ाना प्रताप' लाहौर ने १० सितंबर, १९२२ ई. को आंखों देखी घटनाओं का ज़िक्र इस प्रकार किया है:—

''१० सितंबर, १९२२ ई. को अकाली सिंघ, गुरुद्वारा गुरु का बाग़ में धार्मिक समागम कर रहे थे। एक सिंघ— स. गंगा सिंघ भाषण दे रहा था। डिप्टी सुप्रिंटेंडेंट पुलिस मिस्टर बी. टी. अपनी पुलिस फोर्स सहित घटना-स्थल पर पहुंच गया। बी. टी. ने भाषण दे रहे सिंघ को ज़ोरदार थप्पड़ मारा। फिर उसे पकड़ कर नीचे धरती पर फेंक दिया। बी. टी. ने उस सिंघ को अनगिनत ठोकरें मारी। वहां मौजूदा पुलिस फोर्स भी हरकत में आ गई। पुलिस ने बाकी सिंघों पर लाठियां बरसानी शुरू कर दीं। यह सारी कार्यवाही तब तक चलती रही जब तक सारे सिंघ ज़ख़्मी न हो गए। फिर पुलिस वाले नीचे गिरे हुए सिंघों को उठा कर नज़दीक पानी से भरे हुए खेतों में फेंक रहे थे। कई पुलिस वाले नीचे गिरे हुए ज़ख़्मी सिंघों पर चढ़ कर नाचते हुए देखे गए। लगभग सारे सिंघ बुरी तरह से ज़ख़्मी हो गए थे।''

१० सितंबर, १९२२ ई. वाले दिन हिंदोस्तान की कई प्रसिद्ध हस्तियां, जैसे कि पंडित मदन मोहन मालवीय, कुमारी लजावती, प्रसिद्ध हकीम अजमल ख़ान, स्वामी श्रद्धानंद ने भी गुरुद्वारा गुरु का बाग़ में पहुंच कर सरकारी ज़ुल्म-ओ-सितम की घटनाओं को अपनी आँखों से देखा था। उस दिन शाम के समय जलियां वाला बाग़ में एक विशाल जलसा किया गया था। इस जलसे में पंडित मदन मोहन मालवीय ने बोलते हुए कहा था कि ''अंग्रेज़ सरकार की दमनकारी नीति अमानवीय और असभ्यक है। पुलिस के जुल्म के बावजूद अकाली सिंघ जिस शांतमयी ढंग से अपना आंदोलन कर रहे हैं, उसके लिए मैं आंदोलनकारी सिंघों का बार-बार धन्यवाद करता हूं और उनके सम्मान में अपना सिर झुकाता हूं।'' उन्होंने फिर कहा कि ''ऐसी शांतिपूर्ण भावना की मिसाल सारे संसार में कहीं नहीं मिलती। हिंदुओं और मुसलमानों को अकाली सिंघों से अहिंसा का पाठ सीखना चाहिए। बंदूक की गोली खाकर मरने का दुख छोटी चीज़ होती है, परंतु अपने

शरीर पर लगातार लाठियों के वार सहने और बुरी तरह से ज़ख़्मी होने के बावजूद अपनी मंजिल की तरफ बढ़ते रहना अग्नि-परीक्षा में से कुंदन बन कर निकलने के समान है।''

उसी जलसे में कुमारी लजावती ने कहा कि ''प्रथम विश्व-युद्ध में सिक्खों ने अंग्रेज़ साम्राज्य के डूब रहे जहाज़ को डूबने से बचाने के लिए बड़ा प्रशंसनीय काम किया था। अब मोर्चा गुरुद्वारा गुरु का बाग़ में सिक्ख कौम ने साबित कर दिया है कि वह शांतमयी आंदोलन में भी उतनी ही बहादुर हैं, जितने बहादुर वो मैदान-ए-जंग में थी। अकाली सिंघ अंग्रेज़ सरकार के ज़ुल्म और अत्याचार के वार अपने शरीर पर सह कर हिंदोस्तान की आज़ादी को और भी नज़दीक ले आए हैं।''

एक पूर्व फ़ौजी स. अनूप सिंघ ने इसी जलसे में बोलते हुए बताया कि ''उसका परिवार पिछली चार पीढ़ियों से अंग्रेज़ सरकार की फ़ौज में सेवा करता आ रहा है। अंग्रेज़ सरकार द्वारा किये जा रहे ज़ुल्म की खबरों पर उसे बिलकुल यकीन नहीं हो रहा था कि अंग्रेज़ सरकार शांतमयी सिंघों पर इतना ज़ुल्म कर सकती है। यह सारा ज़ुल्म अपनी आंखों से देख कर उसका सरकार के बारे में सारा भ्रम दूर हो गया। यदि अंग्रेज़ सरकार का यह ज़ुल्मी दौर इसी तरह जारी रहा तो मैं ख़ुद सरकार की पेंशन को लात मार कर इस शांतमयी आंदोलन में ख़ुशी-ख़ुशी कूद जाऊंगा।'' इसके बाद पूर्व फौजियों के कई जत्थों ने इस आंदोलन में हिस्सा लिया था और लगभग सभी जत्थों में कुछ न कुछ पूर्व फ़ौजी ज़रूर शामिल होते थे।

पंजाब के सबसे बड़े ईसाई पादरी सी. एफ. एंड्रयूज ने जब मोर्चे के बारे में खबरें अखबारों में पढ़ी तो वह इन घटनाओं को खुद देखने के लिए श्री अमृतसर पहुंच गया था। पादरी ने आंखों देखी घटनाओं का ज़िक्र करते हुए बताया कि ''पिछले दिनों श्री हरिमंदर साहिब में मुझे यह नज़ारा देखने को मिला, जब आंदोलनकारी बड़ी धार्मिक श्रद्धा सहित सिर पर काली दसतार, ऊपर सफ़ेद मोतियों के फूलों के हार सजाए शांतमयी आंदोलन में हिस्सा लेने के लिए 'सतिनामु वाहिगुरू ' का जाप करते हुए गुरुद्वारा गुरु का बाग़ के लिए रवाना हुए थे। रास्ते में सभी वर्गों के लोग उनको उत्साहित करने के लिए सड़क के दोनों तरफ़ हाथ जोड़ कर खड़े थे। जब ये आंदोलनकारी लंबा सफ़र पैदल तय कर गुरुद्वारा गुरु का बाग़ में पहुंचे तो उनके पैर और टांगें धूल-मिट्टी एवं कीचड़ से लथपथ थीं। उनके शरीर में से पसीने की दुर्गंध आ रही थी। जब मैं गुरुद्वारा साहिब पहुंचा तो मैं यह देख कर हैरान रह गया कि आंदोलनकारी और अन्य सैकड़ों सिंघ शांतमयी होकर शबद-गायन कर रहे थे। ऐसे शांतमयी माहौल को देख कर मैंने आंदोलनकारियों की मार-कुटाई के बारे नें जानना चाहा। इस बारे में पूछने पर मुझे यह जान कर बेहद हैरानी हुई कि पुलिस द्वारा गुरुद्वारा

साहिब की पिछली तरफ़ आंदोलनकारियों की मार-कुटाई का दौर चल रहा है। मैं गुरुद्वारा साहिब की पिछली तरफ चला गया। मैंने वहां देखा कि चार आंदोलनकारी सिंघ गुरबाणी के सम्मान में हाथ जोड़े शबद पढ़ते हुए, पुलिस से तीन फुट की दूरी पर खड़े थे। चार सिंघों में से एक सिंघ पुलिस की तरफ आगे बढ़ा। बिना किसी किस्म की तकरार के पुलिस अफ़सर मिस्टर बी. टी. ने पीतल के कील वाली लाठी उस सिंघ की गर्दन पर मारी। वह सिंघ पलटी खाकर नीचे धरती पर गिर गया। नीचे गिरे हुए आंदोलनकारी पर पुलिस अफ़सर ने अनगिनत ठोकरें मार-मार कर उसे अधमरा कर दिया। यह ज़ुल्मी नज़ारा देख कर मैं बड़ी मुश्किल से अपने आप पर काबू रख सका। मुझे इस तरह महसूस हो रहा था जैसे मैं ईसा मसीह को सूली पर चढ़ता हुआ देख रहा हूं। ऐसा दृश्य देखना दिल और दिमाग़ दोनों के लिए बहुत ही कष्टदायक था। नीचे गिरे हुए सिंघ ने जब फिर उठने की कोशिश की तो उसे लाठियों के और कई वार सहने पड़े। इसी तरह बाकी के आंदोलनकारी जब भी आगे बढ़ने की कोशिश करते, तो उनकी भी पुलिस द्वारा बहुत वहशियाना तरीके से मार-कुटाई की जाती। पुलिस वाले नीचे गिरे हुए आंदोलनकारियों पर चढ़ कर नाचते-कूदते और खुश होते देखे गए। पुलिस की यह सारी कार्यवाही बेहद वहशियाना थी। आंदोलनकारियों की रूहानी सहनशीलता बयान करने से बाहर है, क्योंकि सिंघों ने मन करके, वचन करके और कर्म करके, ख़ामोश एवं शांतिपूर्ण रहने का जो प्रण श्री अकाल तख़्त साहिब पर किया था, उस पर पूर्ण रूप से वे फूल चढ़ाते नज़र आ रहे थे। सिंघों का हाथ जोड़ कर शबद पढ़ते हुए पुलिस की मार खाने के लिए ख़ुशी-ख़ुशी आगे बढ़ना, सही अर्थों में जीते-जी शहादत प्राप्त करने के बराबर था। शांतमयी आंदोलनकारी सिंघों द्वारा संसार भर के लोगों को नैतिक लड़ाई का एक नया सबक सिखाया जा रहा था।''

अमेरिका से आए एक पत्रकार कैप्टन वर्गीज ने १२ और १३ सितंबर, १९२२ ई. को गुरुद्वारा गुरु का बाग में पहुंच कर शांतमयी आंदोलनकारियों पर अंग्रेज़ सरकार द्वारा किये जा रहे ज़ुल्म और अन्य अमानवीय अत्याचार के बारे में एक डाक्यूमेंट्री फ़िल्म बनाई थी। इस फ़िल्म की हेंडलाइन बहुत ही दिलचस्प थी। हॅड लाइन इस प्रकार थी— ''मानवीय इतिहास का बेमिसाल शांतमयी आंदोलन, जो हिंदोस्तान के पंजाब राज्य में चल रहा है, में लाखों सिक्ख, जिन्होंने अंग्रेज़ सरकार के अत्याचार का किसी भी हिंसक प्रकार का विरोध न करने की कसम खाई हुई है तथा जिनके पास अपने धर्म में आस्था के बिना और कोई हथियार नहीं है, ब्रिटिश हुकूमत के विरुद्ध बग़ावत करने पर तुले हुए हैं।''

इस फ़िल्म के पहले सीन में एक अंग्रेज़ पुलिस अफ़सर द्वारा लाठी से एक आंदोलनकारी सिंघ को पीट-पीट कर नीचे ज़मीन पर गिरता

हुआ दिखाया गया था। मार खा-खाकर आंदोलनकारी जब उठने की कोशिश करता है तो उसे फिर लाठियों से पिटता हुआ दिखाया था। नीचे गिरे आंदोलनकारी को पुलिस वाले ठोकरें मारते दिखाए गए थे। कई दृश्यों में घुड़सवार पुलिस वाले नीचे गिरे आंदोलनकारी सिंघों के ऊपर से दगड़-दगड़ कर गुज़रते दिखाए गए थे। कई दृश्यों में पुलिस के पालतू कुत्ते आंदोलनकारियों को काटते हुए दिखाए गए थे। यह फ़िल्म जब अमेरिका में दिखाई गई तो अमेरिकी दर्शकों के दिल में सिक्ख भाईचारे के प्रति हमदर्दी की लहर उठनी शुरू हो गई थी। ऐसी फ़िल्म न दिखाए जाने के लिए ब्रिटिश प्रधानमंत्री ने अमेरिकन राष्ट्रपति को लिखित अपील की थी। इस फ़िल्म ने अंग्रेज़ सरकार की घिनौनी करतूतों का भांडा अंतर्राष्ट्रीय चौराहे पर फोड़ दिया था, जिस कारण ब्रिटिश सरकार को उस समय बड़े अपमान का सामना करना पड़ा था।

१७ नवंबर, १९२२ ई. तक सरकार द्वारा गिरफ़्तार किये गए आंदोलनकारियों की संख्या ५५०० से भी अधिक हो चुकी थी और अभी भी अनगिनत अकाली सिंघ गिरफ़्तारियां देने के लिए सारे पंजाब में से जोर-शोर से पहुंच रहे थे। वास्तव में सरकार आंदोलनकारियों के साथ निपटते-निपटते थक चुकी थी। सरकार ने गिरफ़्तारियों का सिलसिला बंद कर दिया था। सरकार ने सर गंगाराम को इस मसले के हल के लिए मध्यस्थ बना लिया था। सर गंगाराम ने महंत सुंदर दास को एक हज़ार रुपए देकर गुरुद्वारे की ज़मीन का पटा अपने नाम करवा लिया था। फिर सर गंगाराम ने अंग्रेज़ सरकार को एक हलफिया बयान दे दिया कि उसे गुरुद्वारा गुरु का बाग़ की ज़मीन में से अकाली सिंघों द्वारा पेड़ काटे जाने पर कोई एतराज़ नहीं है। इस तरह सरकार ने अपरोक्ष रूप से अपनी हार मान ली और इस उलझन में फंसी सरकार अपनी जान बचा कर भाग निकली। परिणामस्वरूप १८ नवंबर, १९२२ ई. को मोर्चा गुरुद्वारा गुरु का बाग़ फतह हो गया।

गुरुद्वारा गुरु का बाग़ के मोर्चे ने यह बात स्पष्ट कर दी थी कि थोड़े समय में ही महत्वपूर्ण परिणाम प्राप्त करने के लिए शांतमयी आंदोलन सफल पैंतरा है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा निश्चित किए गए स्पष्ट निशाने के कारण यह मोर्चा पूर्ण सफलता प्राप्त करने में कामयाब रहा है। शांतमयी आंदोलन के कारण मोर्चा गुरुद्वारा गुरु का बाग़ को हिंदोस्तान के सारे धर्मों के पैरोकारों की हमदर्दी हासिल हुई। सिंघों के चमत्कारी कारनामों को देख कर, सुन कर देश के आम लोग धन्य-धन्य कर रहे थे।

इस तरह अंग्रेज़ साम्राज्य के ज़ुल्मी तूफ़ान की अग्नि-परीक्षा में से गुज़र कर मोर्चा गुरुद्वारा गुरु का बाग़ के शांतमयी आंदोलनकारी सिंघों ने अपने नैतिक जीवन-मूल्यों को कायम रखते हुए, विजेता अंदाज़ में खालसा पंथ का नाम सारी दुनिया में रौशन कर दिया है।

भारत की आज़ादी के लिए सिक्खों की कुर्बानियां

*- स. गुरदीप सिंघ**

देश की आज़ादी का कोई भी फ्रंट ऐसा नहीं जिसमें सिक्ख कौम ने बढ़-चढ़ कर योगदान न दिया हो। चाहे सिक्ख कौम की आबादी उस समय १.५ प्रतिशत के लगभग थी तब भी आज़ादी के लिए दी गई कुर्बानियों में इसका हिस्सा ९० प्रतिशत से ऊपर है। श्री गुरु नानक देव जी के आगमन से पहले लंबी ग़ुलामी ने इस देश की वीरता, आत्मसम्मान और गैरत को पैरों तले रौंद दिया था। १५२१ ई. में श्री गुरु नानक देव जी ने उस वक्त के मीर बाबर को अत्याचारी कह कर जुल्म के खिलाफ आवाज़ उठाने का आगाज़ किया था :

खुरासान खसमाना कीआ हिंदुसतानु डराइआ॥
आपै दोसु न देई करता
जमु करि मुगलु चड़ाइआ॥ *(पन्ना ३६०)*

श्री गुरु नानक देव जी ने जुल्म के विरुद्ध आवाज़ उठाई। श्री गुरु नानक देव जी को बाबर की जेल में चक्की भी पीसनी पड़ी, फिर भी गुरु जी ने देशवासियों को स्वतंत्रता का एहसास दिलाया। समाज में स्त्रियों को योग्य स्थान दिलाने के लिए और जात-पांत व ऊच- नीच के विरुद्ध आवाज़ बुलंद की। 'सरबत्त के भले' का उपदेश दिया। श्री गुरु नानक देव जी ने नानक निरमल पंथ की नींव रखी और देशवासियों के सीने में आज़ादी के जज़्बे की ज्योति जलाई। आपके बाद के गुरु साहिबान ने इस ज्योति को प्रज्वलित रखने का बीड़ा उठाया। सबसे पहले श्री गुरु अरजन देव जी ने इस देश की स्वतंत्रता के लिए अपनी शहादत दी। उनके बाद श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब ने (कश्मीरी पंडितों की पुकार पर) शहादत दी। उनके साथ गुरसिक्ख भाई मतीदास जी, भाई सतीदास जी और भाई दिआला जी को भी उसी समय शहीद किया गया।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के चार साहिबज़ादे और असंख्य सिक्खों ने मानवता की स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए देश-धर्म की रक्षा हेतु अपनी जान कुर्बान की। देश की स्वतंत्रता का कोई ऐसा आंदोलन नहीं जिसमें इन्होंने आगे होकर कुर्बानी न दी हो। 'ग्लैस्गो हेरॉल्ड कलकत्ता' तारीख़ ३-११-१८२५ के अनुसार, ''१८२४ ईस्वी के बर्मा युद्ध में सिक्ख सैनिकों की कंपनी ४७ नेटिव इन्फेंट्री में विद्रोह भड़काने का दोष लगा कर रिसालेदार सुर सिंघ, जाता सिंघ, बलाका सिंघ और एक बंगाली मि. दास को फांसी चढ़ाया गया। इस विद्रोह में ८८० फ़ौजी मारे गए या फांसी चढ़ाए गए।''

जुलाई, १८२४ ई. में रुड़की के नज़दीक अंग्रेज़ों के विरुद्ध बग़ावत में गोरा और गोरखा

**३०२, किदवाई नगर, लुधियाना-१४१००८; फोन : ९८८८१-२६६९०*

फौजों के साथ लड़ते हुए २०० देश-भक्त शहीद हुए, जिनमें ८८ सिक्ख थे।

१४ अक्तूबर, १८२५ ई. को गारनेडियर कंपनी ने आसामी भाइयों की आज़ादी को ख़त्म करने से इनकार कर दिया। इस विद्रोह में लगभग ४०० सिक्ख शहीद हुए।

१८४९ ई. में सिक्खों ने अंग्रेज़ों के विरुद्ध भारत की आज़ादी की आख़िरी जंग लड़ी। इसके बाद डोगरों की गद्दारी के कारण हुई सिक्खों की हार के बाद संपूर्ण भारत अंग्रेज़ी राज्य में मिला दिया गया।

१८६९ ई. में बाबा राम सिंघ ने शांतमयी आंदोलन शुरू किया था। १८७१ ई. में गऊ-हत्या आंदोलन में विभिन्न स्थानों पर कसाइयों को काट दिया गया। श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर के प्रवेश द्वार के साथ एक बूचड़ख़ाना खोला गया था जिससे श्री दरबार साहिब और अमृत सरोवर की पवित्रता भंग होती थी। रातो-रात कसाइयों को काट डाला और बूचड़ख़ाना गिरा कर स्थान सपाट किया गया।

मिलेट्री में सिक्ख सैनिकों ने साम्राज्यवाद के विरुद्ध बग़ावत करने का यत्न किया। १८७२ ईस्वी में सिक्खों ने असलाख़ाने पर कब्ज़ा करने का फ़ैसला किया। इस यत्न में कोतवाल और ७ फ़ौजी मारे गए, परन्तु लुधियाना के जिलाधिकारी ने फ़ौजी सहायता एवं रियासतों की सहायता से इस दल को गिरफ़्तार कर लिया।

१९०७ ईस्वी में स. अजीत सिंघ (शहीद भगत सिंघ के चाचा जी) ने 'पगड़ी संभाल जट्टा' का नारा लगा कर अंग्रेज़ सरकार को खुला चैलेंज दिया। इसी साल कनाडा में 'बब्बर अकाली लहर' और केलिफोर्निया' में 'ग़दर पार्टी' संगठन शुरू किये गए।

१९१३ ईस्वी में बाबा सोहण सिंघ भकना ने 'ग़दर पार्टी' की नींव रखी।

१९१४ ई. में बाबा गुरदित्त सिंघ ३७६ भारतीय यात्रियों (जिनमें ३५५ सिक्ख थे) को कामागाटामारू जहाज़ में लेकर भारत आए तो साम्राज्यवादियों ने २९ दिसंबर, १९१४ ई. को पचास सिक्ख शहीद कर दिए और शेष बंदी बना लिए। इसकी ख़बर जब विदेशों में पहुँची तो आक्रोश भड़क उठा और मनीला, शिंघायी, जापान, अमेरिका आदि में बसते १७० सिक्खों का जत्था २४ अक्तूबर, १९१४ ई. को भारत पहुँचा। सबको गिरफ़्तार कर मिंटगुमरी जेल में बंद कर दिया गया।

१९१५ ई. में स. करतार सिंघ सराभा ने भारतीय फौजियों के मन में देश की स्वाधीनता के जज़्बे का उत्साह भरने का कार्यक्रम बनाया, परन्तु सफल न होने के कारण १४ नवंबर, १९१७ ई. को १२ सिक्ख साथियों सहित फांसी के तख़्ते पर लटका दिया। उनके १५ साथियों को अदालत ने बाद में मौत की सज़ा दी।

अप्रैल १९१९ ई. में वैसाखी वाले दिन श्री अमृतसर में जलियां वाला बाग़ का ख़ूनी कांड हुआ, जिसमें शहीद होने वाले १३०० देश-भक्तों में ७६९ सिक्ख शूरवीर थे।

१९२२ ई. में बब्बरों ने बब्बर अकाली लहर

का आगाज कर अंग्रेज साम्राज्य की पकड़ को काफ़ी नुकसान पहुँचाया।

गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर (१९२१ से १९२४ ईस्वी) वास्तव में देश के स्वतंत्रता आंदोलन का आरंभ था, जिसे देश के राष्ट्रीय नेताओं ने स्वीकार किया है। इस संबंध में उनके विचार इस प्रकार हैं :—

''मैं प्रणाम करता हूँ अकालियों को, जिन्होंने देश की आज़ादी के लिए संघर्ष आरंभ किया है और आज़ादी के लिए लड़ रहे हैं।''
(पंडित मोती लाल नेहरू)

''गुरुद्वारा गुरु का बाग में से देश की स्वतंत्रता की लहर उठी है। अब इसने ही देश को आज़ाद करवाना है।'' (पंडित मदन मोहन मालवीय)

''आज़ादी हर एक का अधिकार है। हम कपूत हैं, परन्तु अकाली देश के सपूत हैं, जो कि इस अधिकार के लिए लड़ रहे हैं।''

(लाला लाजपत राय)

''सिक्ख वीरों ने हमें देश की स्वतंत्रता की प्राप्ति की युक्ति सिखा दी है। अब दुनिया की कोई भी ताकत हमें ज्यादा देर तक ग़ुलाम नहीं रख सकती।'' (दादा भाई नारो जी)

गुरुद्वारा गुरु का बाग के मोर्चे के बाद श्री सी. एफ. एंड्रयूज लिखता है :—

''श्री गुरु नानक देव जी के सिक्खों ने दुनिया को अहिंसा का एक नया सबक सिखाया है।''

पंडित मदन मोहन मालवीय सिक्खों की कथनी और करनी से इतना प्रभावित था कि उसने हिंदुओं को इस बात के लिए प्रेरित किया कि अगर विदेशी हुकूमत की ग़ुलामी से मुक्त होना चाहते हो तो फिर हर हिंदू घर को कम से कम अपना एक पुत्र सिंघ सजाना चाहिए।

गुरुद्वारा श्री तरनतारन साहिब के पहले शहीद स. हज़ारा सिंघ की वीर-गाथा सुन कर गांधी जी ने गुरुद्वारा आज़ाद होने पर अकाली दल को तार भेजी :—

''मुझे देश आज़ाद कराने का नुस्ख़ा मिल गया है। गुरुद्वारा आज़ाद हो गया। बधाई हो! अब देश भी आप ही ने आज़ाद कराना है।''

डाक्टर गंडा सिंघ के अनुसार, ''गुरुद्वारा मूवमेंट में ५०० सिक्ख शहीद हुए, ३० हज़ार जेलों में गए और १० लाख रुपया सिक्खों ने जुर्माना भरा।''

बाबा राम सिंघ द्वारा शुरु की और महात्मा गांधी द्वारा चलाई १९३० ई. की असहयोग लहर में कुर्बान होने में सिक्ख सबसे आगे रहे।

१९३४ ई. का सर्व हिंद कांग्रेस सेशन बंबई (मुंबई) में होना था, परन्तु अंग्रेज़ सरकार ने पंडाल लगने में रुकावट डाली। पंजाब से मास्टर तारा सिंघ की जत्थेदारी में एक सौ जांबाज अकाली शूरवीरों का जत्था वहां पहुँचा और साम्राज्यवाद के गुंडों को ललकारा। इन शूरवीरों की तेग की छांव में ही तब वहाँ सेशन हो सका, नहीं तो साम्राज्यीय सरकार ने तब सेशन फ़ेल करने के पूरे मंसूबे बना रखे थे।

देश-स्वाधीनता में स. किशन सिंघ गड़गज्ज, भाई ईशर सिंघ, मास्टर मोता सिंघ, स. खड़क सिंघ, स. तेजा सिंघ समुंदरी, भाई रणधीर सिंघ,

मास्टर तारा सिंघ, झबालीए भाइयों आदि सैकड़ों अकाली सिंघों की गतिविधियां उल्लेखनीय हैं।

स. भगत सिंघ हंसते-हंसते फांसी के तख़्ते पर चढ़ गया। जनरल मोहन सिंघ ने दूसरे देशों की सहायता से बाकायदा जंग लड़ने की योजना बनाई थी। जनरल मोहन सिंघ ने जापान में आज़ाद हिंद फ़ौज को संगठित किया। जब जनरल को जापानियों ने गिरफ़्तार कर लिया तो मास्टर तारा सिंघ को मिले जनरल मोहन सिंघ के संदेश पर मास्टर जी ने सुभाष चंद्र बोस को यहाँ से निकल जाने की, जनरल के पास पहुँचाने की योजना बनाई। सुभाष चंद्र बोस को पहुँचाने वाले सभी सिक्ख ही थे। आज़ाद हिंद फ़ौज की कुल संख्या ४२ हज़ार में से २८ हज़ार सिक्ख सैनिक थे।

१९४६ ई. में बंबई में नेवी के जवानों के विद्रोह में भी सिक्ख सैनिक किसी से पीछे नहीं थे। नीचे दिया विवरण स्वतंत्रता संग्राम में सिक्ख कौम की तरफ से की महान कुर्बानियों की मुँह बोलती तस्वीर है :—

	कुल	**सिक्ख**	**ग़ैर-सिक्ख**
फांसी मिली	१२१	९३	२८
उम्र कैद	२६४६	२१४७	४९९
जलियां वाला बाग़ के शहीद	१३००	७९९	५०१
बजबज घाट के शहीद	११३	६७	४६
कूका लहर के शहीद	९१	९१	--
अकाली लहर के शहीद	५००	५००	--
कुल	**४७७१**	**३६९७**	**१०७४**

लम्बे संघर्ष के बाद देश आज़ाद हुआ। इसमें सिक्खों ने अपनी आबादी के अनुपात से कहीं अधिक योगदान दिया।

सरदार करतार सिंघ सराभा

-डॉ. विभा खरे*

१६ नवंबर, १८९६ ई. को लुधियाना जिले के सराभा गाँव में पैदा हुए क्रान्तिकारी सरदार करतार सिंघ सराभा हिन्दोस्तान की आज़ादी की लड़ाई में शहीद होने वाला सबसे कम उम्र (१९ वर्ष) का आत्मबलिदानी था। ऐसे अमर सेनानी को अंग्रेज सरकार का तख्ता पलटने के षड्यन्त्र में लाहौर की सेन्ट्रल जेल में फांसी की सजा दी गयी। शहीद करतार सिंघ के पिता सरदार मंगल सिंघ साधारण किसान थे। दादा सरदार सोहन सिंघ बचपन में बाल करतार सिंघ को शहीदों की कहानियां सुनाते। इस प्रकार सरदार करतार सिंघ का बाल-मन देश-भक्ति के प्रति प्रारम्भ से ही समर्पित हो गया।

अचानक सरदार करतार सिंघ के जीवन में बड़ा परिवर्तन आया। सराभा गाँव के कुछ लोग-गदर पार्टी के कार्यकर्ता पार्टी के निमन्त्रण पर अमेरिका जा रहे थे। पढ़ाई की छुट्टियों में सरदार करतार सिंघ भी क्रान्ति की लहर से प्रभावित होकर गदरी क्रान्तिकारियों के साथ अमेरिका चल पड़े। तब प्रथम महायुद्ध चल रहा था। अमेरिका में गदर पार्टी ने सरदार करतार सिंघ को प्रेस प्रभारी बना दिया। इसी बीच सरदार करतार सिंघ ने पत्रिका 'गदर' निकाली। क्रान्तिकारी विचारों से ओत-प्रोत साप्ताहिक पत्रिका 'गदर' हिन्दी, उर्दू, पंजाबी और अंग्रेजी में छपती थी। गदर के सक्रिय प्रसार से हिन्दोस्तानी फौज विद्रोह पर उतारू हो गई। ऐसे में अग्रेज सरकार ने 'गदर' पर प्रतिबंध लगा दिया।

सन् १९१५ में गदर पार्टी की हाई कमान ने गदर पार्टी के सदस्यों को हथियार देकर विद्रोह करने की तैयारी करने के लिए सरदार करतार सिंघ को हिन्दोस्तान भेजा। आजादी के मतवाले सरदार करतार सिंघ स्वाधीनता के लिए क्रान्तिकारी रास बिहारी बोस के निकट आ चुके थे। षड्यन्त्र के समय सरदार करतार सिंघ रास बिहारी बोस के लाहौर वाले मकान में रहते थे। बोस ने सरदार करतार सिंघ को बचाने के लिए उसे गुप्त रूप से काबुल भेज दिया।

काबुल में भारतीय क्रान्तिकारियों के भीतर देश की आजादी की अलख जगाने का कार्य सरदार करतार सिंघ करने लगे। इस उद्देश्य के लिए उन्होंने काबुल से देश-भक्ति के विचारों से ओत-प्रोत एक अख़बार भी निकाला, जिसे गुप्त रूप से सरदार करतार सिंघ हिन्दोस्तानी छावनियों और हिन्दोस्तानी क्रान्तिकारियों के बीच फैलाते रहे। वे काबुल में ज्यादा समय स्थिर नहीं रह सके। तभी रास बिहारी बोस ने हिन्दोस्तान में सक्रिय क्रान्ति का शंखनाद करने के लिए सरदार करतार सिंघ के अनुरोध पर हिन्दोस्तान बुला लिया। हिन्दोस्तान पहुंच कर क्रान्तिकारी सरदार करतार सिंघ आगरा, मेरठ, बनारस, कानपुर और इलाहाबाद छावनियों में खुलकर हिन्दोस्तानी सैनिकों में विद्रोह की ज्वाला जगाने लगे। एक शाम को सरदार करतार

*जी-९, सूर्यपुरम, नन्दनपुरा, झांसी-२८४००३, फोन : ९४१५०-५५६५५

सिंघ सरगोधा फौजी छावनी में खुली मीटिंग कर रहे थे तो अंग्रेज अफसरों ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और उन पर ब्रिटिश सरकार का तख्ता पलटने के षड्यन्त्र का मुकद्दमा चलाया जाने लगा। उस खुली अदालत में किशोर सरदार करतार सिंघ ने ब्रिटिश साम्राज्य को फटकारते हुए कहा— ''मेरी गदर पार्टी का उद्देश्य ब्रिटिश हुकूमत को सदैव के लिए उखाड़ फेंकने का है, क्योंकि अंग्रेज हुकूमत अन्याय, शोषण और हिंसा पर टिकी हुई है। मुट्ठी भर अंग्रेजों को इतने बड़े देश में शासन करने का कोई अधिकार नहीं है। अंग्रेजों को भारत छोड़कर जाना ही पड़ेगा।''

अंग्रेज मजिस्ट्रेट देश-भक्त सरदार करतार सिंघ के इस भाषण एवं उत्साह को देख कर काफी प्रभावित हुआ। उस समय सरदार करतार सिंघ की उम्र केवल १९ वर्ष थी। अंग्रेज मजिस्ट्रेट ने सरदार करतार सिंघ से अपना वक्तव्य बदल कर माफी मांगने को कहा, लेकिन सरदार करतार सिंघ ने झुकने से इनकार कर दिया। १६ नवंबर को (अपने जन्म-दिन पर ही) फांसी का फंदा गले में डालकर शहीदों की परम्परा में एक ज्वलन्त इतिहास-गाथा को जन्म दे गया।

शहीद सरदार करतार सिंघ को फांसी देते समय का हाल अंग्रेज अफसर के आंखों देखे बयान के अनुसार— जब १९ वर्षीय करतार सिंघ ने गले में डाले फांसी के फन्दे को चूमा तो जल्लाद के हाथ-पाँव भी कांप उठे। फांसी पर झूलने से पहले देश-भक्त क्रान्तिकारी सरदार करतार सिंघ सराभा ने हुंकार भर कर कहा था— ''यदि मुझे एक से ज्यादा जिन्दगी मिलती तो मैं अपनी हर जिन्दगी भारत देश पर अर्पण कर देता और करता ही रहता, जब तक मेरा भारत देश आजाद न होता।''

शहीद सरदार करतार सिंघ की शहादत का सर्वाधिक प्रभाव सरदार भगत सिंघ पर पड़ा। शहीद सरदार करतार सिंघ के आत्मबलिदान की सरदार भगत सिंघ पर अमिट छाप पड़ी। सरदार भगत सिंघ एवं उनके साथियों ने सरदार करतार सिंघ व उनके सहयोगियों से जो संदेश एवं ज्योति पाई उसे और भी आगे बढ़ाने का उन्होंने कार्य किया।

अखंड बलिदान की परम्परा में सरदार करतार सिंघ सराभा हिन्दोस्तान की आज़ादी की लड़ाई में प्रेरणा-स्रोत के रूप में स्मरण किये जाते रहेंगे। क्रान्ति-पुत्र सरदार करतार सिंघ सराभा जैसे पुरोधा के संघर्षमयी जीवन-वृत्त को सरदार भगत सिंघ अपनी आदर्श प्रेरणा एवं पवित्र उद्देश्य मानते थे। अपने एक लेख में सरदार भगत सिंघ ने लिखा था— ''सरदार करतार सिंघ की आयु उस समय २० वर्ष की भी नहीं थी जब उन्होंने स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर निज रक्तान्जलि भेंट कर दी।

क्रान्तिकारी समाज के लिए सरदार करतार सिंघ एक प्रतीक हैं। स्वयं सरदार भगत सिंघ सरदार करतार सिंघ का जन्म-दिन हर वर्ष १६ नवंबर को मनाते थे। आज भी देश के कई क्रान्तिकारी सरदार करतार सिंघ की तस्वीर पर अपने खून का टीका लगाकर देश की आजादी की शपथ लेते हैं।

ऐसी गाथा थी अमर क्रान्ति नायक सरदार करतार सिंघ सराभा की, जिनके प्रथम नाम-स्मरण के बिना भारतीय स्वाधीनता संघर्ष का इतिहास अधूरा रहेगा।

खबरनामा

वातावरण-शुद्धता के मद्देनज़र शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी

गुरुद्वारों की ज़मीन पर बाग़ लगाने के लिए हुई सक्रिय

श्री अमृतसर : ३ जुलाई : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने ऐतिहासिक गुरुद्वारों के नज़दीक जंगल स्थापित करने के कार्य को सक्रियता के साथ आरंभ कर दिया है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल के नेतृत्व में कार्यकारिणी कमेटी ने इस सम्बन्ध में फ़ैसला लिया था। इसके अंतर्गत शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रबंध वाले विभिन्न गुरुद्वारा साहिबान में एक-एक एकड़ रकबे में रिवायती बाग़ लगाए जाने हैं। वर्णननीय है कि गुरुद्वारों की ज़मीन पर जंगल लगाने के लिए बाबा सेवा सिंघ खडूर साहिब वालों की सेवा ली जा रही है। बीते दिनों इसकी शुरूआत गुरुद्वारा बीड़ बाबा बुड्ढा साहिब और गुरुद्वारा बाबा बीर सिंघ रत्तोके (ज़िला तरनतारन) से की गई थी। अगले पड़ाव के अंतर्गत गुरुद्वारा साहिब पातशाही पांचवी, ओठियां (बटाला) में प्रमुख शख़्सियतों की मौजूदगी में जंगल की स्थापना का कार्य आरंभ किया गया। इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्य सचिव डॉ. रूप सिंघ ने ख़ुद अरदास की। तत्पश्चात अलग-अलग किस्म के २५०० के करीब पौधे लगाए गए।

इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष भाई रजिंदर सिंघ महिता ने बताया कि जंगलों के बढ़ने-फूलने से वातावरण में शुद्धता और ताज़गी आयेगी। इसके अलावा पक्षियों को भी अपना निवास करने के लिए बेहतर माहौल मिल सकेगा। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रबंधाधीन जिन गुरुद्वारों के पास ज़मीन है, उसमें जल्द ही जंगल स्थापित करने की प्रक्रिया मुकम्मल की जायेगी। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्य सचिव डॉ. रूप सिंघ ने कहा कि गुरुद्वारा साहिबान संगत के लिए प्रेरणा-स्रोत हैं। यहां से दिया गया कोई भी संदेश संगत के लिए बड़ा महत्व रखता है। गुरु-घरों से वातावरण की शुद्धता के लिए संगत में प्रेरणा और चेतना पैदा करने के लिए ही जंगल लगाए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि ५० के करीब किस्म के पौधे इन जंगलों का शृंगार बनेंगे। इन किस्मों में पीपल, बरगद, नीम, हरड़, बहेड़ा, आँवला, जंड, शीशम, कीकर (देसी), अर्जुन, गुल्लढ़, बकैण, शरींह, पुतरनजीवा, झिरमिल, सुखचैन, सागवान, ढक्क, अमलतास, पहाड़ी कीकर, बाँस, चक्करासियां, तूणा, आम, जामुन, अमरूद, आड़ू, कटहल, लासूड़ा, बिल पत्र, अंजीर, देसी बेरी, ढेऊ, अनार, शहतूत, चंदन, कड़ी पत्ता, गेहूँ चंपा, चाँदनी, सरूआ, हार-शृंगार, रात की रानी, जटरोफा,

कनेट, सुहंजना, हरविसकस आदि पौधे हैं।

इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य जत्थेदार सज्जण सिंघ बज्जूमान, जत्थेदार गुरिंदरपाल सिंघ गोरा, जत्थेदार रतन सिंघ जफरवाल, पूर्व सचिव स. बलविंदर सिंघ जौड़ासिंघा, गुरुद्वारा साहिब ओठियां के मैनेजर स. मनजीत सिंघ, गुरुद्वारा श्री कंध साहिब के मैनेजर स. गुरतिंदरपाल सिंघ, गुरुद्वारा सतिकरतारियां साहिब के मैनेजर स. दविंदर सिंघ लाली, बाबा मेजर सिंघ, बाबा अमोलक सिंघ, बाबा गुरप्रीत सिंघ आदि उपस्थित थे।

नवम पातशाह जी के ४०० वर्षीय प्रकाश पर्व को समर्पित

ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी मुकाबले जारी

श्री अमृतसर : ४ जुलाई : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से श्री गुरु तेग़ बहादर जी के ४०० वर्षीय प्रकाश दिवस को समर्पित स्कूली बच्चों के ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी मुकाबले शुरू किये गए हैं। धर्म प्रचार कमेटी के सचिव स. मनजीत सिंघ ने बताया कि इन मुकाबलों के अंतर्गत जोन स्तर के मुकाबले मुकम्मल होने के बाद अब ज़िला स्तरीय मुकाबले जारी हैं, जिनमें से वरीयता सूची (मेरिट) में आने वाले बच्चों को पंजाब स्तरीय मुकाबलों में शामिल किया जायेगा। उन्होंने बताया कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल के निर्देशानुसार ऑनलाइन धर्म प्रचार लहर तेज़ी के साथ आगे बढ़ाई जा रही है। महामारी कोरोना के चलते बड़े इकट्ठ नहीं किये जा सकते थे, जिस कारण ऑनलाइन विधि अपनाई गई है।

स. मनजीत सिंघ ने बताया कि गर्मी की छुट्टियों के दौरान हर साल धर्म प्रचार कमेटी की तरफ से समर कैंप आयोजित किये जाते हैं। इस बार ये कैंप इन्टरनेट के माध्यम से लगाए गए हैं। पिछले महीने पंजाब सहित कई राज्यों में स्कूली बच्चों और आम संगत को नितनेम की संथा दी गई। धर्म प्रचार कमेटी के मुख्य कार्यालय से श्री अकाल तख़्त साहिब के पूर्व जत्थेदार ज्ञानी जोगिंदर सिंघ वेदांती, प्रचारक भाई प्रमिंदर सिंघ, हेंड ग्रंथी भाई सुरजीत सिंघ सभरा गुरबाणी के शुद्ध उच्चारण के बारे में जानकारी देते रहे। इसी दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष भाई रजिंदर सिंघ महिता, मुख्य सचिव और सिक्ख विद्वान डॉ. रूप सिंघ, धर्म प्रचार कमेटी के सदस्य भाई अजायब सिंघ अभ्यासी, स. सुखवरश सिंघ पन्नू, स. तेजिंदरपाल सिंघ लाडवा, हेंड प्रचारक भाई जगदेव सिंघ तथा

अन्य शख़्सियतों की तरफ से विद्यार्थियों को गुरमति सिद्धांतों और इतिहास से सम्बन्धित जानकारी दी गई। इन कैंपों के दौरान बड्डू साहिब की अकाल अकादमियों के विद्यार्थियों ने भी बड़े स्तर पर हिस्सा लिया। स. मनजीत सिंघ ने बताया कि अगले पड़ाव के अंतर्गत प्रश्नोत्तरी मुकाबलों की शुरूआत की गई है। विद्यार्थियों की सिक्ख इतिहास, गुरबाणी, सिक्ख रहित मर्यादा और सिक्ख सरोकार से संबंधित तैयारी करवा कर प्रश्नोत्तरी मुकाबले चल रहे हैं। इन मुकाबलों के दौरान जोन स्तर पर चुने जाने वाले बच्चे ज़िला स्तरीय मुक़ाबलों में हिस्सा ले रहे हैं। अंत में पंजाब स्तरीय मुकाबले करवाए जाएंगे, जिनमें से अव्वल आने वाले विद्यार्थियों को विशेष सम्मान दिया जायेगा। इसके अलावा ज़िला और जोन स्तरीय मुकाबलों में से प्रथम स्थान पर रहे बच्चों को भी इनाम दिए जाएंगे। उन्होंने बताया कि इस कार्य के लिए धर्म प्रचार कमेटी के प्रचारक लगातार कार्यशील हैं और संगत की तरफ से भी भरपूर सहयोग मिल रहा है।

मलेरकोटला के मुस्लिम भाईचारे की तरफ से श्री दरबार साहिब के लंगर के लिए ३३० कुंतल गेहूँ भेंट

श्री अमृतसर : १० जुलाई : सिक्ख-मुस्लिम भाईचारक रिश्ते की मिसाल पेश करते हुए मलेरकोटला के मुसलमान भाईचारे की तरफ से श्री दरबार साहिब के लंगर के लिए ३३० कुंतल गेहूँ भेंट कर गुरु-घर के प्रति श्रद्धा का प्रकटावा किया गया। 'सिक्ख-मुस्लिम भाईचारा संगठन' के प्रमुख डॉ. नसीर अख्तर के नेतृत्व में पहुँचे मुस्लिम भाईचारे के सदस्यों ने इस दौरान सचखंड श्री हरिमंदर साहिब में माथा टेका और श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ के साथ मुलाकात की। उन्होंने पंगत में बैठकर गुरु का लंगर भी छका। गेहूँ भेंट करते समय धर्म प्रचार कमेटी के सदस्य भाई अजायब सिंघ अभ्यासी, श्री दरबार साहिब के मैनेजर स. मुखतार सिंघ और अतिरिक्त मैनेजर स. राजिंदर सिंघ रूबी ने उन्हें सम्मानित किया।

इस अवसर पर बातचीत करते हुए डॉ. नसीर अख्तर ने कहा कि सिक्खों एवं मुसलमानों का रिश्ता गुरु साहिबान के समय से है। उन्होंने कहा कि आपसी प्यार और भाईचारक रिश्ता वर्तमान समय की और भी बड़ी ज़रूरत है। उन्होंने श्री गुरु रामदास जी के लंगर की महानता का बखान करते हुए कहा कि यहां बिना किसी भेदभाव के हर वर्ग के लोगों को परशादा छकाया जाता है। यह हर गुरु-दरबार की महानता है। उन्होंने कहा कि हमारी खुशकिस्मती है कि इस विशाल गुरु के लंगर के लिए हम लोग कुछ भेंट कर सके हैं। उन्होंने बताया कि यह गेहूँ मलेरकोटला में बसते समूह मुस्लिम

भाईचारे की तरफ से मिल-जुल कर इकट्ठी की गई है। इस दौरान धर्म प्रचार कमेटी के सदस्य भाई अजायब सिंघ अभ्यासी ने मलेरकोटला से पहुँचे मुस्लिम भाईचारे का शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल की तरफ से धन्यवाद किया। इस अवसर पर अनवर ख़ान, शबीर ख़ान, मुहम्मद अरफान, मुहम्मद लियाकत, मुहम्मद अख्तर, सादिक अली, मुहम्मद हनीफ आदि उपस्थित थे।

पाकिस्तान रेल-बस हादसे के दौरान मारे गए सिक्खों की आत्मिक शांति के लिए अरदास समागम

श्री अमृतसर : १२ जुलाई : बीते दिनों पाकिस्तान में रेल-बस हादसे के दौरान मारे गए सिक्खों की आत्मिक शान्ति के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा श्री दरबार साहिब परिसर में सुशोभित गुरुद्वारा श्री मंजी साहिब दीवान हाल में श्री अखंड पाठ साहिब के भोग के पश्चात अरदास की गई। इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल, सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के एडिशनल हॅड ग्रंथी ज्ञानी जगतार सिंघ, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष भाई रजिंदर सिंघ महिता समेत कई प्रमुख शख़्सियतों ने हाज़री भरी। श्रद्धांजलि समारोह के दौरान हज़ूरी रागी भाई जगतार सिंघ के जत्थे ने गुरबाणी-कीर्तन किया और भाई प्रेम सिंघ ने अरदास की।

भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल ने हादसे में मारे गए सिक्खों को श्रद्धांजलि भेंट करते हुए कहा कि इस दुखमयी समय में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी पीड़ित परिवारों के साथ हमदर्दी रखती है। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से मृतक सिक्खों के परिवार को १-१ लाख रुपए और घायलों को ५०-५० हज़ार रुपए की सहायता का एलान किया गया है, जिसे भेजने के लिए जल्द कार्यवाही की जायेगी। भाई लौंगोवाल ने कहा कि पाकिस्तान की मुद्रा के अनुसार यह राशि दुगनी हो जाएगी। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान सरकार को भी पीड़ित सिक्ख परिवारों की मदद के लिए आगे आना चाहिए। इसके साथ ही सरकार दोषी रेलवे कर्मचारियों के विरुद्ध सख़्त कार्यवाही को भी अंजाम दे। इस समागम में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्य सचिव डॉ. रूप सिंघ ने भी संगत को संबोधित किया। इस अवसर पर कार्यकारिणी सदस्य बीबी कुलदीप कौर टौहड़ा, स. मंगविंदर सिंघ खापड़खेड़ी, सचिव स. मनजीत सिंघ, निजी सचिव स. महिंदर सिंघ आहली, अतिरिक्त सचिव स. सुखदेव सिंघ भूराकोहना, स. परमजीत सिंघ सरोआ, मैनेजर स. मुख्तार सिंघ चीमा आदि भी उपस्थित थे।